प्रस्तावना

सन् १९०७ ईसवी में हमने एक लिपि से पलटू साहिव की कुंडलियाँ थोड़े से अरिल छंद इत्यादि के साथ छापी थीं और फिर कुछ रेख़्ते, झूलने और भजन मिले जिन्हें एक छोटी सी पुस्तक के रूप में सन् १९०८ में छापा परन्तु इन पदों की दूसरी लिपि न मिलने के कारण उनके मुकाबला और भली भाँति जाँच करने का मौक़ा न मिला, अपनी अल्प बुद्धि अनुसार दो पलटूपथी साधुओं से जहाँ तहाँ पूछ कर छाप दिया। हाल में बाबा सरजूदासजी पलटूपंथी, पुराना कोपा, जिला आजमगढ़ के महत से भेंट हुई और इन परोपकारी महात्मा ने कृपा करके हमको अपनी हस्त-लिखित पुस्तक पलटू साहिव की बानी की दी जिससे मिलान करके त्रुटियाँ जो पहिले छापे में रह गई थीं ठीक की गईं और बहुत सी नई मनोहर कुंडलियाँ, रेख़्ते, झूलने, अरिल छंद, कवित्त, सवैये और भजन के पद चुनने का भी अवसर मिला। यह सब पहिले छपे हुए पदों के साथ नये सिर से तीन भागों मे इस क्रम से छापे जाते हैं :—

भाग १—कुंडलियाँ।

भाग २—रेख़्ता, झूलना, अरिल कबित्त और सवैया।

भाग ३—रागों के शब्द या भजन, और साखियाँ जो ठाकुर गगाबख़्श सिंह, जमींदार, मौजा टँडवा, जिला फ़ैज़ाबाद ने कृपा करके भेजीं।

इस सहायता के लिए हम महन्त सरजूदासजी का मुख्य कर और ठाकुर गगावख़्शसिंहजी को धन्यवाद हृदय से देते हैं। महन्तों मे हमको आज तक ऐसे कोई नहीं मिले थे जिन्होंने आप अपने पथ के प्रचारक महात्मा का ग्रन्थ स्वच्छ परोपकार के निमित्त वड़े उत्साह से छापने को दिया हो।

इलाहाबाद } सन् १९२७ }

अधम
एडिटर संतबानी-पुस्तक-माला।

जीवन चरित्र

महात्मा पलटूदासजी (पलटू साहिव) के जीवन-चरित्र के हम बहुत दिन से खोज में हैं परन्तु कहीं से पूरा हाल आज तक नहीं मिला यद्यपि कितने ही ग्रन्थ देखे गये और देश देशान्तर के साधुओं, विद्वानों और निज पलटूपंथी महन्तों से दरियाफ्त किया गया। पलटूदास जी के सगे भाई और परम भक्त पलटूप्रसाद ने (जिनका ससारी नाम कुछ और ही था) अपनी 'भजनावली" नामक पुस्तक में थोडा सा हाल लिखा है जिससे निश्चय होता है कि पलटू साहिव ने नगपुरजलालपुर गाँव में एक काँदू बनिया के कुल में जन्म लिया जिसे "भजनावली" मे नगाजलालपुर के नाम से लिखा है। यह गाँव फ़ैज़ाबाद के जिले मे आजमगढ़ की पच्छिम सीमा से मिला हुआ है नंगाजलालपुर नाम का कोई गाँव आजमगढ या फ़ैज़ाबाद के जिले में नहीं है। यहीं इनके पुरोहित गोविन्दजी महाराज रहते थे और दोनों ने बाबा जानकीदास नामक साधू से उपदेश लिया था, पर उनकी शांति नहीं हुई इसलिये सार वस्तु की

खोज में दोनों निकले। गोविंदजी जगन्नाथपुरी को जाते थे कि रास्ते में भीखा साहिब के दर्शन मिले जिनसे गुप्त भेद प्राप्त हुआ। तब गोविंदजी पलटू साहिब के पास लौटकर आये और पलटू साहिब ने उनसे सार वस्तु का उपदेश लेकर उन्हें गुरू धारन किया।

भजनावली के तीन दोहे यहाँ लिखे जाते हैं :—

नंगाजलालपुर जन्म भयो है, बसे अवध के खोर।
कहैं पलटूपरसाद हो, भयो जक्त में सोर॥
चार बरन को मेटि के, भक्ति चलाई मूल।
गुरु गोविंद के बाग में, पलटू फूले फूल॥
सहर जलालपुर मूड़ मुड़ाया, अवध तुड़ा करधनियाँ।
सहज करैं व्योपार घट में, पलटू निर्गुन बनियाँ॥

पलटू साहिब उन्नीसवें शतक विक्रमीय में वर्त्तमान थे—अवध के नौवाब शुजा-उद्दौला और हिन्दुस्तान के बादशाह शाह आलम इनके समकालीन थे जिनको हुए डेढ़ सौ बरस का जमाना बीता। यह महात्मा सदा गृहस्थ आश्रम में रहे और इनके वंश के लोग अब तक नगपुरजलालपुर के गाँव में मौजूद हैं।

पलटू साहिब बहुत काल तक फैजाबाद के अयोध्या नगर में विराजमान थे जहाँ उन्होंने अपना सतसंग खड़ा किया और अपने उपदेश से अनेक जीवों को चिताया। इसी स्थान पर उन्होंने शरीर त्याग किया और वहाँ उनकी समाधि और संगत अब तक मौजूद हैं। और जगहों में भी इन महात्मा के अनुयाइयों की संगत हैं और पलटूपंथी साधू और गृहस्थ तो थोड़े-बहुत भारतवर्ष के हर विभाग में पाये जाते हैं।

पलटू साहिब की प्रचण्ड महिमा और कीर्ति को देखकर अयोध्या और आस-पास के अखाड़ों के वैरागियों के चित्त में बड़ी जलन और ईर्षा पैदा हुई जिसका इशारा पलटू साहिब ने अपनी बानी में भी जगह-जगह पर किया है। कहते हैं कि यह ईर्षा इतनी बढ़ी कि इन दुष्टों ने गुट करके पलटू साहिब को जीते जी जला दिया परन्तु उसी समय और उसी देँह से वह फिर जगन्नाथपुरी में प्रकट हुए और तत्काल ही फिर गुप्त हो गये। इसके प्रमाण में यह साखी दी हुई है :—

अवधपुरी में जरि मुए दुष्टन दिया जराय।
जगन्नाथ की गोद में पलटू सूते जाइ॥

इनके बहुत से चमत्कार और मोजजे मुर्दों के जिलाने इत्यादि के प्रसिद्ध हैं जिनके यहाँ लिखने की आवश्यकता नहीं है।

इलाहाबाद
सितम्बर १९१५

अधम
एडिटर संतबानी-पुस्तकमाला।

विषय-सूची

पलटू साहिब

भाग ३

—:❀:—

शब्द

—:❀:—

॥ गुरुदेव ॥

१

गगन कि धुनि जो आनई, सोई गुरु मेरा ।
वह मेरा सिरताज है, मैं वा का चेरा ॥टेक॥
सुन में नगर बसावई, सूतत में जागै ।
जल में अगिन छपावई, संग्रह में त्यागै ॥१॥
जंत्र बिना जंत्री बजे, रसना बिनु गावै ।
सोहं सबद अलापि कै, मन को समुझावै ॥२॥
सुरति डोर अमृत भरै, जहँ कूप उरधमुख ।
उलटै कमल हिं गगन में, तब मिलै परम सुख ॥३॥
भजन अखंडित लागई, जस तेल कि धारा ।
पलटुदास दंडौत करि, तेहि बारम्बारा ॥४॥

२

बूझि विचारि गुरु कीजिये, जो कर्म से न्यारा ।
कर्म-बंध हरि दूरि है, बूड़हु मँझधारा ॥टेक॥
काम क्रोध जिनके नहीं, नहिं भूख पियासा ।
लोभ मोह एको नहीं, नहिं जग की आसा ॥१॥
ज्यौं कंचन त्यौं काँच है, अस्तुति सो निन्दा ।
सत्र मित्र दोउ एक हैं, मुरदा नहिं जिन्दा ॥२॥

जोग भोग जिनके नहीं, नहिं संग्रह त्यागी ।
बंद मोष एको नहीं, सत सबद के दागी ॥३॥
पाप पुन्य जिनके नहीं, नहिं गरमी पाला ।
पलटू जीवन-मुक्त ते, साहिब के लाला ॥४॥

३

गुरु दरियाव नहाया है, ता की दुरमति भागी ॥टेक॥
गुरु दरियाव सदा जल निरमल, पैठत उपजे ज्ञाना है ॥१॥
अरसठ तीरथ गुरु के चरनन, स्त्री मुख आपु बखाना है ॥२॥
जब लग गुरु दरियाव न पावै, तब लग फिरै भुलाना है ॥३॥
पलटूदास हम बैठि नहाने, मिटिगा आना जाना है ॥४॥

४

चादर लेहु धुवाइ है, मन मैल भया है ॥टेक॥
सतगुरु पूरा धोबी पाया, सतसंगति सौंदाई है ॥१॥
तिरगुन दाग पर्‍यो चादर में, मलि मलि दाग छुड़ाई है ॥२॥
आँच दिहिन वैराग कि भाठी, सरवन मनन घमाई[1] है ॥३॥
निरखि परखि कै चादर धोइनि, साबुन ज्ञान लगाई है ॥४॥
पलटूदास ओढ़ि चलु चादर, बहुरि न भवजल आई है ॥५॥

५

सकल तजि गुरु ही से ध्यान लगैहौं ॥टेक॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस न पुजिहौं, ना मूरत चित लैहौं ।
जो प्यारा मोरे घट माँ बसतु है, वाही को माथ नवैहौं ॥१॥
ना कासी में करवत लैहौं, ना पचकोस में जैहौं ।
प्राग जाय तीरथ नहिं करिहौं, जगर न सीस कटैहौं ॥२॥
अजपा और अनाहू साधो, त्रिकुटी ध्यान न लैहौं ।
पदम आसन खींच न बैठौं, अनहद नाहिं बजैहौं ॥३॥
सबही जाय छोड़ि के साधो, गुरु का सुमिरन लैहौं ।

(१) नाम या पद में फैलाना ।

गुरु मूरत हिरदय में छाई, वाही से ध्यान लगैहैं ॥४॥
दुई खुदी हस्ती जब मेटे, निरंकार कहलैहैं।
गगन भूमि में राज हमारो, अनलहक[1] धूम मचैहैं ॥५॥
पलटूदास प्रेम की बाजी, गुरु ही से दाँव लगैहैं।
जीतौं तो मैं गुरु को पावैं, हारैं तो उनकी कहैहैं ॥६॥

॥ घट मठ ॥

६

साहिब आप बिराजै सकल घट, चारि खानि बिच राजै ॥टेक॥
नारी पुरुष देव औ दानव, बाग फूल औ माली।
हाथी घोड़ा बैल ऊँट में, कतहूँ रहै न खाली ॥१॥
मच्छ कच्छ घरियार अचर चर, आग पवन औ पानी।
तीतर बाज सिंह औ हरिना, पूरन चारिउ खानी ॥२॥
ज्ञानी मूढ़ गुरू औ चेला, चोर साहु भरभूना[2]।
बिस्वा बिसनी[3] भेड़ कसाई, नाहिं कोई घर सूना ॥३॥
यह सरीर नासक[4] है भाई, जीव कै नास न होई।
पलटूदास जगत सब भूला, भेद न जानै कोई ॥४॥

७

तो में है तेरा राम बैरागिन, भूलि गया तोहि धाम ॥टेक॥
घिव ज्यों रहै दूध के भीतर, मथे बिनु कैसे पावै।
फूल मँहै ज्यों बास रहतु है, जतन सेती अलगावै ॥१॥
मिहँदी मँहै रहै ज्यों लाली, काठ में अगिन छिपानी।
खोदे बिना नहीं कोइ पावै, ज्यों धरती में पानी ॥२॥
ऊख मँहै ज्यों कंद रहतु है, पेड़ रहै फल माहीं।
देस देसंतर ढुँढ़त फिरतु है, घट की सुधि है नाहीं ॥३॥
पूरन ब्रह्म रहै तोही में, क्यों तू फिरै उदासी।
पलटूदास उलटि कै ताके, तूही है अबिनासी ॥४॥

---

(१) अहंब्रह्म। (२) भड़भूँजा। (३) ऐयाश, विषई। (४) नाशमान।

८

क्यों तू फिरै भुलानी जोगिनि, पिय को मरम न जानी ॥टेक॥
अपने पिय को खोजन निकरी, है तू चतुर सयानी ।
कंठ में माला खोजै बाहर, अजहूँ लै पहिचानी ॥१॥
मृग की नाभि महै कस्तूरी, वाको बास बसानी ।
खोजत फिरै नहीं वह पावै, होस न करै अपानी ॥२॥
लरिका रहै बगल में तेरे, सहर ढोल दै छानी[1] ।
खसम रहै पलना पर सूता, पिय पिय करै दिवानी ॥३॥
साचा सतगुरु खोजु जाय तू, दयावंत सत-ज्ञानी ।
पलटूदास पिया पावैगी, लेहु बचन को मानी ॥४॥

९

ऐसी कुदरति तेरी साहिब, ऐसी कुदरति तेरी है ॥टेक॥
धरती नभ दुइ भीत उठाया, तिस में घर इक छाया है ।
तिस घर भीतर हाट लगाया, लोग तमासे आया है ॥१॥
तीन लोक फुलवारी तेरी, फूलि रही बिनु माली है ।
घट घट बैठा आपै सींचै, तिल भर कहीं न खाली है ॥२॥
चारि खानि औ भुवन चतुरदस, लख चौरासी बासा है ।
आलम तोहि तोहि में आलम, ऐसा अजब तमासा है ॥३॥
नटवा होइ कै बाजी लाया, आपुइ देखनहारा है ।
पलटूदास कहौं मैं का से, ऐसा यार हमारा है ॥४॥

॥ सर्व-व्यापक ॥

१०

जगन्नाथ जगदीस, जग में व्यापि रहा ॥ टेक ॥
चारि खानि में लख चौरासी, और न कोई दूजा ।
आपुइ ठाकुर आपुइ सेवक, करत आपनी पूजा ॥ १ ॥
आपुइ दाता आपुइ मंगता, आपुइ जोगी भोगी ।

---

(१) नगर भर घूम कर ढिंढोरा पीट गई है ।

आपुइ बिस्वा[1] आपुइ बिसनी[2], आपु बैद अप रोगी ॥ २
ब्रह्मा बिस्नु महेस आपुई, सुर नर मुनि होइ आया।
आपुहि ब्रह्म निरूपम गावै, आपुहि प्रेरत माया ॥ ३ ।
आपुइ कारन आपुइ कारज, बिस्वरूप[3] दरसाया।
पलटूदास दृष्टि तब आवै, संत करै जब दाया ॥ ४ ॥

११

साहिब तुम सब के वाली,
तेरे बिनु कहूँ न खाली ॥ टेक ॥
सब घट तेरा नूर बिराजै,
कहूँ चमन कहुँ गुल कहुँ माली ॥ १ ॥
पलटू साहिब जुदा नहीं है,
मिंहदी के पात छिपी ज्यों लाली ॥ २ ॥

॥ आरती ॥

१२

जै जै जै गुरु गोबिन्द[4] आरती तुम्हारी।
निरखत पद कंज कमल, कोटि पतित तारी ॥ टेक ॥
कोटि भानु उदै जा के, दीपक के बारी।
छीर है समुद्र जा के, चरन का पखारी[5] ॥ १ ॥
लख चौरासी तीनि लोक, जा की फुलवारी।
पुहुप लै कै का चढ़ावों, भँवर कै जुठारी ॥ २ ॥
बाल भोग कहा दीजै, द्वारे पदारथ चारी।
कुबेरजी भंडारी जा के, देवी पनिहारी ॥ ३ ॥
सुन्न सिखर भवन जा के, तुरिया असवारी।
आठ पहर बाजा बजै, सबद की झनकारी ॥ ४ ॥
काम क्रोध लोभ मोह, सतगुरु धै मारी।
पलटूदास देखि लिया, तन मन धन वारी[6] ॥ ५ ॥

---

(१) कसबी। (२) भोगी। (३) संसार। (४) पलटू साहिब के गुरू का नाम।
(५) धोवन। (६) न्योछावर।

१३

आरती कीजै संत चरन की,
यही उपाय न आन तरन की ॥ टेक ॥
संत को जस हरि स्त्री मुख गावै,
संत कि रज ब्रह्मा नहिं पावै ॥ १ ॥
संत चरन बैकुंठ है लोचत,
संत चरन को तीरथ सोचत ॥ २ ॥
संत राम से अंतर नाहीं,
इक रस देखत दुऊ माहीं ॥ ३ ॥
लछमी है संतन की दासी,
रज[1] चाहत कैलास के बासी ॥ ४ ॥
कोटि मुक्ति संतन की चेरी,
पलटूदास मूल हम हेरी ॥ ५ ॥

१४

आरति राम गरीब निवाजा,
तीनि लोक सब के सिरताजा ॥ टेक ॥
तुम्हरो पतित पावनो बाना,
मैं तो पतित आपु सो जाना ॥ १ ॥
नाम तुम्हारो अधम उधारा,
सब अधमन को मैं सिरदारा ॥२॥
नाम तुम्हारो दीन दयाला,
इहै जानि मैं लीन्हा माला ॥ ३ ॥
सुनेउ अनाथन के तुम नाथा,
यह सुनि आइ पसारेउ हाथा ॥ ४ ॥
नांव तुम्हारो अंतरजामी,
पलटूदास क्या कहै अपानी ॥ ५ ॥

(१) चरन धूर।

॥ शब्द ॥

१५

अरे मोरे सबद बिबेकी हंसा हो, बैठो सबद की डार ॥टेक॥
सबदै ओढ़ौ सबद बिछाओ, सबदै भूख अहार।
निसि दिन रहौ सबद के घर में, सबदै गुरू हमार ॥१॥
लै हथियार सबद के मारो, सबद खेत ठहराओ।
कबहुँ कुचाल जो होइ तुम्हारी, सबद में आगि लुकाओ ॥२॥
आदि अनादि सबद है भाई, सबदै मूल बिचारा।
जिनके चोट सबद की लागी, आवागवन निवारा ॥३॥
सबदै मूल है सबदै साखा, सबदै सबद समाना।
पलटूदास जो सबद बिबेकी, सबद के हाथ बिकाना ॥४॥

१६

मुए सोई जीवते भाई, जिन्ह लगी सबद की चोट ॥टेक॥
उनको काऊ कुछ कहै, उन तजी है जक्त की लाज।
वो सहज परायन होइ गये, उन सुफल किया सब काज ॥१॥
उनको और न भावई, इक भावत है सतसंग।
वो लोहा से कंचन भये, लगि पारस के परसंग ॥२॥
जिन्ह ने सबद बिचारिया, तिन्ह तुच्छ लगै संसार।
वो आय पड़े सतसंग में, सब डारि दिया सिर भार ॥३॥
सबद छुड़ावै राज को, फिरि सबदै करै फकीर।
पलटूदास वो ना जियै, जिन्ह लगा सबद का तीर ॥४॥

॥ संत और साध ॥

१७

धन जननी जिन जाया है, सुत संत सखी री ॥१॥
तन मन धन उन पै लै दीजे, सत्तनाम जिन पाया है ॥२॥
माया जा के निकट न आवै, तिरगुन दूर बहाया है ॥३॥
कंचन काच औ सत्रु मित्र को, भेद नहीं बिलगाया है ॥४॥

सहज समाधि अखंडित जा की, जग मिथ्या ठहराया है ॥५॥
पलटूदास सोई सुतवंती, संत को गोद खिलाया है ॥६॥

१८

संत सिपाही बाँके अवधू, फिरि पाछे नहिं ताके ॥टेक॥
दिन दिन परै कदम आगे को, करैं मुलुक[1] में साके[1]।
हाँक देत हैं रन के ऊपर, रहैं प्रेम रस छाके ॥१॥
कच्चा छीर नहीं वे पीवैं, पक्का छीर पिवैं वे मा के।
आलम[2] डेरा देखि कै उनको, छोड़ैं सबद धड़ाके ॥२॥
उन को भूख पियास न लागै, ज्यौं खाये त्यौं फाके।
अस्तुति निन्दा दुष्ट मित्र को, एक राह में हाँके ॥३॥
काम क्रोध की गर्दन मारैं, दिल के बहुत फराखे[3]।
पलटूदास फरक आलम से, वे असनाव[4] हैं का के ॥४॥

१९

दिल को करहु फराख[5] फकीरा, रहु मुहासबे[6] पाक ॥ टेक ॥
जो आवै सो देहु लुटाई, क्या कौड़ी क्या लाख।
खाहु खियावहु मगन रहो तुम, सब से रहु बेबाक[7] ॥ १ ॥
औरत जो दरसन को आवै, नजर से ताकहु पाक।
सोना रूपा लाल जवाहिर, तुम्हरे लेखे खाक ॥ २ ॥
माया को चिरकीन[8] लखो तुम, देखि कै मूँदो नाक।
जब आवै तब देहु चलाई, तनिक न रहियो ताक ॥ ३ ॥
संत चकोर की संग्रह नाहीं, संग्रह करै हलाक।
पलटूदास कहौं मैं सब से, बार बार दै हाँक ॥ ४ ॥

॥ सतसंग ॥

(२०)

संतन संग अनन्द परम सुख ॥ टेक ॥

---

(१) अपना सम्बत या सन् चलाना जो भारी कीर्त्ति का निशान है। (२) सृष्टि। (३) उदार। (४) दोस्त, यार। (५) उदार। (६) हिसाब किताब से। (७) लेखा ब्योढ़ा। (८) मैला।

जेकरी संगति ज्ञान होत है, मिटत सकल दुख द्वंद ।
उनके निकट काल नहिं आवै, टूटि जात जम फंद ॥ १ ॥
फूल संग से तेल बखानो[1] सब कोइ करत पसंद ।
पारस छुए लोह भा कंचन, दुरमति सकल हरंद[2] ॥ २ ॥
हेलुवाई ज्यों अवटि जारि कै, करत खाँड़ से कंद ।
पलटूदास यह बिनती मोरी, अजहुँ चेत मतिमंद ॥ ३ ॥

२१

चतुरन से हम दूरि, कहत ऊधो से स्री मुख ॥ टेक ॥
तीरथ बरत जोग जप तप में, मो से न भेंट सहै किननो दुख ।
ज्ञान कथै बहु भेष बनावै, इहौ बात सब तुक्ख[3] ॥ १ ॥
नेम अचार करै कोउ कितनौ, कबि कोबिद सब खुक्ख[4] ।
तिरदंडी सरबंगी नागा, मरै पियास औ भुक्ख[5] ॥ २ ॥
तजि पाखंड करै सतसंगति, जहाँ भजन में सुक्ख ।
पलटूदास हरि कहि ऊधो से, सतसंगति में सुक्ख ॥ ३ ॥

२२

जिन पाया तिन पाया है, सतसंग सखी री ॥ टेक ॥
तीरथ बरत करै कोउ कितनौ, नाहक जनम गँवाया है ॥१॥
जप तप जज्ञ करै कोउ कितनौं, फिरि फिरि गोता खाया है २॥
बेद पढ़ी पढ़ि पंडित मरिगा, फिरि चौरासी आया है ॥३॥
पलटूदास बात है सहजी, संतन भेद बताया है ॥४॥

॥ चितावनी ॥

२३

कहवाँ से जिव आये कहवाँ समाने हो साधो ।
का देखि रहेउ भुलाय कहाँ लिपटाने हो साधो ॥ १ ॥
निर्गुन से जिव आये सर्गुन समाने हो साधो ।
भूलि गये हरि नाम माया लिपटाने हो साधो ॥ २ ॥

---

(१) महिमा हुई । (२) हर गई या दूर हुई । (३) तुच्छ । (४) थोथा । (५) भूख ।

जैसे तुरकी घोड़ खैंचि लट बागा हो साधो ।
ऊँच सीस भये नीच चुगन लागे कागा हो साधो ॥ ३ ॥
आठ काठ कै पिंजरा दस दरवाजा हो साधो ।
कौनिक निकसा प्रान कौन दिसि भागा हो साधो ॥ ४ ॥
रोवत घर की नारि केस लट खोले हो साधो ।
आज मंदिर भयो सून कहाँ गये राजा हो साधो ॥ ५ ॥
आलहि[१] बाँस कटाइन डँडिया फँदाइन हो साधो ।
पाँच पचीस बराती लेइ सब धाये हो साधो ॥ ६ ॥
तीरे दिहिन उतारि सकल नहवावैं हो साधो ।
करि सोरहो सिंगार सबै जुरि आये हो साधो ॥ ७ ॥
आलहि चँदन कटाइन घेरि घर छाइन हो साधो ।
लोग कुटुम परिवार दिहिन पहुड़ाई हो साधो ॥ ८ ॥
लाइ दिहिन मुख आगि काठ करि भारा हो साधो ।
पुत्र लिये कर बाँस सीस गहि मारा हो साधो ॥ ९ ॥
चहुँ दिसि पवन झकोरै तरवर डोलै हो साधो ।
सूझत वार न पार कौन दिसि जाना हो साधो ॥१०॥
हियवाँ नहिं कोइ आपन जे से मैं बोलौं हो साधो ।
जस पुरइनि[३] कर पात अकेला मैं डोलौं हो साधो ॥११॥
विष बोयों संसार अमृत कैसे पावौं हो साधो ।
पुरब जनम कर पाप दोस केहि लावौं हो साधो ॥१२॥
भौसागर की नदिया पार कैसे पावौं हो साधो ।
गुरु बैठे मुख मोड़ि मैं केहि गोहरावौं हो साधो ॥१३॥
जेहि बैरिन कर मूल ताहि हित मान्यो हो साधो ।
पलटूदास गुरु ज्ञान सुनत अलगान्यो हो साधो ॥१४॥

---

(१) जल्दी । (२) लिटाया । (३) कोईं ।

२४

लादि चला बंजारा है, कोउ संग न साथी ॥ टेक ॥
जाति कुटुम सब रुदन[1] करत हैं, फेरि बैठि सुख दारा[2] है ॥१॥
छुटिगै बरदी लुटिगै टाँडा, निकरि गया वह प्यारा है ॥२॥
बैठे काग सून भा मंदिल, कोई नहीं रखवारा है ॥३॥
पलटूदास तजो मृगतृस्ना, झूठा सकल पसारा है ॥४॥

२५

भजि लीजे हरि नाम, काम सकल तजि दीजे ॥ टेक ॥
मातु पिता सुत नारि बांधवा, आवै ना कोउ कामा।
हाथी घोड़ा मुलुक खजाना, छुटि जैहैं धन धामा ॥ १ ॥
जब तुम आया मूठी बाँधे, हाथ पसारे जाना।
सूखा हाथ जगत की माया, ताहि देखि ललचाना ॥ २ ॥
नर तन सुभग भजन के लायक, कौड़ी हाट बिकाना।
हरिगा ज्ञान परा कुसंगति, अमृत में बिष साना ॥ ३ ॥
एक न भूला दुइ ना भूला, भूला सब संसारा।
पलटूदास हम कहा पुकारी, अब ना दोस हमारा ॥ ४ ॥

२६

बृद्ध भये तन खासा, अब कब भजन करहु गे ॥ टेक ॥
बालापन बालक सँग बीता, तरुन भये अभिमाना।
नख सिख सेती भई सपेदी, हरि का मरम न जाना ॥ १ ॥
तिरिमिरि बहिर नासिका चूवे, साक[3] गरे चढ़ि आई।
सुत दारा गरियावन लागे, यह बुढ़वा मरि जाई ॥ २ ॥
तीरथ बर्त एको नहिं कीन्हा, नहीं साधु की सेवा।
तीनिउ पन धोखे में बीते, ऐसे मूरुख देवा ॥ ३ ॥
करा आइ काल ने चोटी, सिर धुनि धुनि पछिताता।
पलटूदास कोऊ नहिं संगी, जम के हाथ बिकाता ॥ ४ ॥

(१) बिलाप। (२) स्त्री। (३) दमा।

२७

भजन करु मूरख कहँ भटकै रे ॥ टेक ॥
यह संसार माया कै लासा,
छुटै नाहिं जो सिर पटकै रे ॥ १ ॥
माया मोह रैन का सपना,
झूठे माहि कहा अटकै रे ॥ २ ॥
भरा घट घड़ा हरि नाम अमी है,
जग चहला में लपटै रे ॥ ३ ॥
मिलु सतगुरु तोहि नाम पिलावै,
जावै तपनि जुगन जुग कै रे ॥ ४ ॥
नहिं डेरात जम बाँधि के ठगिहैं,
ऊपर गोड़ नरक लटकै रे ॥ ५ ॥

२८

पाती आई मोरे पीतम की, साईं तुरत बुलायो हो ॥ टेक ॥
इक अँधियारी कोठरी, दूजे दिया न बाती ।
बाँह पकरि जम ले चले, कोइ संग न साथी ॥ १ ॥
सावन की अँधियारिया, भादौं निज राती ।
चौमुख पवन झकोरही, धड़कै मोरि छाती ॥ २ ॥
चलना तो हमें जरूर है, रहना यहँ नाहीं ।
का लेके मिलब हजूर से, गाँठी कछु नाहीं ॥ ३ ॥
पलटुदास जग आय के, नैनन भरि रोया ।
जीवन जनम गँवाय के, आपै से खोया ॥ ४ ॥

२९

घरिय पहर में कूच तुम्हारा,
मन तुम भयो अनारी हो ॥ १ ॥
केहि कारन धन धाम सँवारहु,
नाहक करहु बेगारी हो ॥ २ ॥

जम राजा से का तुम कहिहौ,
पूछै दै दै गारी हो ॥ ३ ॥
घर की नारि फेरि मुँह बैठी,
बड़ी रही हितकारी हो ॥ ४ ॥
गाँठी दाम राह ना पैंड़ा,
बूड़ि मुए मँझधारी हो ॥ ५ ॥
पलटूदास संतन बलिहारी,
हम को पार उतारी हो ॥ ६ ॥

३०

के दिन का तोरा जियना रे, नर चेतु गँवार ॥ टेक ॥
काची माटि के घैला[1] हो, फूटत नहिं बेर।
पानी बीच बतासा हो, लागै गलत न देर ॥ १ ॥
धूआँ कौ धौरेहर हो, बारू कै भीत।
पवन लगे झरि जैहै हो, तृन ऊपर सीत ॥ २ ॥
जस कागद कै कलई हो, पाका फल डार।
सपने के सुख संपति हो, ऐसो संसार ॥ ३ ॥
घने बाँस का पिंजरा हो, तेहि बिच दस द्वार।
पंछी पवन बसेरू हो, लावै उड़त न बार ॥ ४ ॥
आतसबाजी यह तन हो, हाथे काल के आग।
पलटूदास उड़ि जैबहु हो, जब देइहि दाग ॥ ५ ॥

३१

काल बली सिर ऊपर हो, तीतर कौं बाज।
चंगुल तर चिचियैहौ हो, तब मिलिहैं मिजाज ॥ १ ॥
भजन बिना का नर तन हो, रैयत बिनु राज।
बिना पिता का बालक हो, रोवै बिनु साज ॥ २ ॥

---

(१) घड़ा।

देव रु पितर उपासक हो, परिहै जम गाज[1] ।
वहुत पुरुष कै नारी हो, बिस्वा नहिं लाज ॥ ३ ॥
काम क्रोध बिनु मारे हो, का दिहे सिर ताज ।
पलटुदास धृग जीवन हो, सब झूठ समाज ॥ ४ ॥

३२

मेरे मनुआँ रे तुम तौ निपट अनारी ॥ टेक ॥
कौड़ी कौड़ी लाख बटोरेहु, नाहक किहेहु बेगारी ।
तहु चढ़ि चलेहु चारि के काँधे, दूनों हाथ पसारी ॥ १ ॥
वहुरि वहुरि कै राँध परोसी, आये मूड़ फेकारी[2] ।
जाति कुटुंब सब रोवन लागे, सँग लागि बूढ़ि महतारी ॥ २ ॥
तुहरे संग कोऊ नहिँ जाई, कोठा महल अटारी ।
अपने स्वारथ को सब रोवैं, झूठ मूठ कै आ री ॥ ३ ॥
धरमराय जब लेखा मँगिहैं, करबेहु कौन बिचारी ।
पलटू कहत सुनो भाइ साधो, इतनी अरज हमारी ॥ ४ ॥

३३

पानी बीच बतासा साधो तन का यही तमासा है ॥ टेक ॥
मुट्ठी बाँधे आया बंदा, हाथ पसारे जाता है ।
ना कुछ लाया न ले जायगा, नाहक क्यों पछिताता है ॥ १ ॥
जोरू कौन खसम है किसका, कैसा तेरा नाता है ।
पड़ा बेहोस होस कर बंदे, विषय लहर में माता है ॥ २ ॥
ज्यों ज्यों बंदे तेरी पलक परत है, त्यों त्यों दिन नगिचाता है ।
नेकी बदी तेरे संग चलेगी, और सब झूठी बाता है ॥ ३ ॥
मान तुम्हारे पाहुन बंदे, क्यों रिस किये कुँहाता[3] है ।
पलटूदास बंदगी चूके, बंदा ठोकर खाता है ॥ ४ ॥

॥ वैराग ॥

३४

जनि कोइ होवै बैरागी हो बैराग कठिन है ॥ टेक ॥

---

(१) बिजली । (२) सिर खोले । (३) रूठना ।

जग की आसा करै न कबहूँ, पानी पिवै ना माँगी हो।
भूख पियास छुटै जब निन्द्रा, जियत मरै तन त्यागी हो ॥ १ ॥
जा के धर पर सीस न होवै, रहै प्रेम लौ लागी हो।
पलटुदास बैराग कठिन है, दाग दाग पर दागी हो ॥ २ ॥

॥ बिरह ॥

३५

जेकरे अँगने नौरँगिया, सो कैसे सोवै हो।
लहर लहर बहु होय, सबद सुनि रोवै हो ॥ १ ॥
जेकर पिय परदेस, नींद नहिं आवै हो।
चौंकि चौंकि उठै जागि, सेज नहिं भावै हो ॥ २ ॥
रैन दिवस मारै बान, पपीहा बोलै हो।
पिय पिय लावै सोर, सवति होइ डोलै हो ॥ ३ ॥
बिरहिनि रहै अकेल, सो कैसे कै जीवै हो।
जेकरे अमी कै चाह, जहर कस पीवै हो ॥ ४ ॥
अभरन देहु बहाय, बसन धै फारौ हो।
पिय बिनु कौन सिंगार, सीस दै मारौ हो ॥ ५ ॥
भूख न लागै नींद, बिरह हिये करकै हो।
माँग सेंदुर मसि पोछ[१], नैन जल ढरकै हो ॥ ६ ॥
केकहें करै सिंगार, सो काहि दिखावै हो।
जेकर पिय परदेस, सो काहि रिझावै हो ॥ ७ ॥
रहै चरन चित लाइ, सोई धन आगर हो।
पलटुदास कै सबद, बिरह कै सागर हो ॥ ८ ॥

३६

जा के लगी सोई तन जानै,
दूजो कवन हाल पहिचानै ॥ टेक ॥

(१) माँग का सेंदुर और आँख का काजल दोनों पोछ डाले जायँ।

है कोइ भेदी भेद बतावै,
कैसे बिरहिनि दिवस गँवावै ॥ १ ॥

मारग दूर पथिक सब हारे,
उतरन को भवसागर पारे ॥ २ ॥

उकठा पेड़ सींचै जो माली,
घायल फिरौं भई मतवाली[1] ॥ ३ ॥

एक तो लागी प्रेम की गाँसी,
दूजे सहौं जक्त उपहासी ॥ ४ ॥

लागी लगन टरै नहिं टारे,
क्या करै औषद बैद बेचारे ॥ ५ ॥

पलटूदास लगी तन मेरे,
घायल फिरैं और बहुतेरे ॥ ६ ॥

२७

मेरे लगी सबद की गाँसी है, तब से मैं फिरौं उदासी है ॥टेक॥
नैनन नीर ढुरन मोरे लागे, परी प्रेम की फाँसी है ॥ १ ॥
भूषन बसन नहीं मोहिं भावैं, छाड़ा भोग बिलासी है ॥ २ ॥
मन भया छीन दीन हुई सब से, अबला नाम पियासी है ॥ ३ ॥
चारिउ खूँट कानन गिरि[2] खोजा, खोजा मथुरा कासी है ॥ ४ ॥
जा से पूछौं कोउ न बतावै, और करै उपहासी है ॥ ५ ॥
पलटूदास हम खोजि निकारा, है बैरागिनि खासी है ॥ ६ ॥

२८

पिया पिया बोलै पपीहा है,
सबद सुनत फाटै हीया है ॥ टेक ॥

सोवत से मैं चौंकि परी हौं,
धकर धकर करै जीया है ॥ १ ॥

---

(१) अगर माली जड़ से सूखे पेड़ को सींच कर हरा कर सकता हो तो मुझ घायल मतवाली की दशा भी सुधरना मुमकिन है। (२) बन और पहाड़।

पिय की सोच परी अब मो को,
पिय बिनु जीवन छीया है ॥ २ ॥
बैरी होइ के आय पपीहा,
बिरह जँजाल मोहिं दीया है ॥ ३ ॥
हित मेरा यह बड़ा पपीहा,
उपदेस आइ मोहिं कीया है ॥ ४ ॥
पलटुदास पपिहा की दौलत[1],
बैराग जाइ हम लीया है ॥ ५ ॥

३९

साहिब के घर बिच जावोंगी।
जावोंगी सुख पावोंगी ॥ टेक ॥
प्रेम भभूत लगाय के सजनी।
संतन कहँ रिझावोंगी ॥ १ ॥
अचरा फारि करौं मैं कफनी।
सेल्ही सुरति बनावोंगी ॥ २ ॥
धूनी ध्यान अकास में देहौं।
नाम को अमल चढ़ावोंगी ॥ ३ ॥
पलटूदास मारि कै गोता।
भक्ति अभय लै आवोंगी ॥ ४ ॥

४०

अब तो मैं बैराग भरी।
सोवत से मैं जागि परी ॥ १ ॥
नैन बने गिर के झरना ज्यों।
मुख से निकरै हरी हरी ॥ २ ॥
आभरन तोरि बसन धै फारौं।
पापी जिउ नहिं जात ॥ ३ ॥

लेउँ उसास सीस दे मारौं।
अगिनि बिना मैं जाउँ जरी ॥ ४ ॥
नागिनि बिरह डसत है मो को।
जात न मो से धीर धरी ॥ ५ ॥
सतगुरु आइ किहिन बैदाई।
सिर पर जादू तुरत करी ॥ ६ ॥
पलटूदास दिहा उन मो को।
नाम सजीवन मूल जड़ी ॥ ७ ॥

४१

साहिब से लागी री सजनी।
मेरो ब्याह भयो बिन मँगनी ॥ १ ॥
लागि गई तब लाज कहाँ की।
कल न परै दिन रजनी ॥ २ ॥
ना नैहर ना सासुर की मैं।
सहज लगी कछु लगनी ॥ ३ ॥
जब हम रहे पिया तब नाहीं।
बूझो बात बैरगनी ॥ ४ ॥
ज्ञान में सोवौं मोह में जागौं।
नहिं सोवौं नहिं जगनी ॥ ५ ॥
भूखल नाहिं न रहौं खाये बिनु।
नहिं संग्रह नहिं त्यगनी ॥ ६ ॥
पलटूदास चलौं नहिं बैठौं।
नहीं भजन नहिं भजनी ॥ ७ ॥

४२

प्रेम बान जोगी मारल हो, कसकै हिया मोर ॥ टेक ॥
जोगिया कै लालि लालि अँखियाँ हो, जस कँवल कै फूल।

हमरी सुरुख चुनरिया हो, दूनोँ भये तूल[1] ॥ १ ॥
जोगिया कै लेउँ मिर्गछलवा हो, आपन पट चीर ।
दूनौं कै सियब गुदरिया[2] हो, होइ जाब फकीर ॥ २ ॥
गगना में सिंगिया बजाइन्हि हो, ताकिन्हि मोरी ओर ।
चितवन में मन हरि लियो हो, जोगिया बड़ चोर ॥ ३ ॥
गंग जमुन के बिचवाँ हो, बहै झिरहिर नीर ।
तेहिँ ठेयाँ जोरल सनेहिया हो, हरि लै गयो पीर ॥ ४ ॥
जोगिया अमर मरै नहिँ हो, पुजवल मोरी आस ।
करम लिखा बर पावल हो, गावै पलटूदास ॥ ५ ॥

४३

पिय से मान न कीजै रजनी[3],
सजनी हठ तजि दीजै ।
जो तू पिय को चाहै प्यारी,
सतसंगति भजि लीजै ॥
पलटुदास तन मन धन दै कै,
प्रेम पिलाया पीजै ॥

४४

रटौँ मैं राम को बैठी, पड़े हैं जीभ में छाला ।
थके दृग पंथ को जोहत[4], जपौं मैं प्रेम का माला ॥ १ ॥
कुसल जब पीव को देखौं, देखे बिनु नाहिँ जीवौंगी ।
खेलौंगी जान पर अपने, पियाला जहर पिवौँगी ॥ २ ॥
बिरह की आग है लागी, मुझे कुछ और ना सूझै ।
सजन वह बड़ा बेदरदी, हमारी दरद ना बूझै ॥ ३ ॥
दीपक को भावता नाहीं, पतँग तन जारि भया राखी ।
पलटूदास जिय मेरा, तुम्हारे बीच है साखी ॥ ४ ॥

---

(१) तुल्य=बराबर । (२) एक लिपि में "कै सियब गुदरिया" की जगह "करब गठिजोरवा" है । (३) रात । (४) रास्ता निहारते ।

४५

अरे दैया हमरे पिया परदेसी ॥ टेक ॥
इक तो मैं पिय की बिरह बियोगिनि,
मो कँह कछु न सुहाई ।
दुसरे सासु ननद मारै बोली,
छतिया मोरि फटि जाई ॥ १ ॥
चुइ चुइ आँसु भींजि मोर अँचरा,
भींजि गई तन सारी ।
भूख न भोजन नींद न आवै,
झुकि झुकि उठौं सम्हारी ॥ २ ॥
अपने पियहिँ पाती लिखि पठइउँ,
मरम न जानै काऊ ।
उमगे जोबन राखि न जाई,
तुम थाती[१] लै जाऊ ॥ ३ ॥
बारी[२] रहउँ भइउँ तरुनापा[३],
सेत भये तन केसा ।
पलटूदास पिया नहिँ आये
तब हम गइनि बिदेसा ॥ ४ ॥

॥ प्रेम ॥

४६

घूँघट को पट खोलौंगी ।
जोगिन ह्वै के डोलौंगी ॥ १ ॥
लोक लाज कुल कानि छोड़ि कै ।
हँसि हँसि बातैँ बोलौंगी ॥ २ ॥
का रिसियाइ करै कोइ मेरा ।
जग से नाता तोरौंगी ॥ ३ ॥

---

(१) अमानत । (२) छोटी । (३) जवान ।

ज्ञान कि ढोल बजाय रैन दिन।
गगन रखाना[1] फोरैंगी ॥ ४ ॥
पलटूदास भई मतवारी।
प्रेम पियाला घोरैंगी ॥ ५ ॥

४७

सतगुरु से लागी नेही है,
बात बहुत यह मेहीं[2] है ॥ टेक ॥
परदा काह खसम से कीजै,
जिन देखा सब देही है ॥ १ ॥
भूलि परी मैं जग के बीचे,
बाँह पकरि लिहा तेरी है ॥ २ ॥
दीनदयाल पतित के पावन,
जन सरनागति लेही है ॥ ३ ॥
पलटूदास धन्य इक सतगुरु,
और बात सब येही है ॥ ४ ॥

४८

जल औ मीन समान, गुरु सं प्रीति जो कीजै ॥ टेक ॥
जल से बिछुरै तनिक एक जो, छोड़ि देत है प्रान ॥ १ ॥
मीन कँहैं लै छीर में राखै, जल बिनु है हैरान ॥ २ ॥
जो कछु है सो मीन के जल है, जल के हाथ बिकान ॥ ३ ॥
पलटूदास प्रीति करै ऐसी, प्रीति सोई परमान ॥ ४ ॥

४९

प्रेम दिवाना मन यार,
गुरु के हाथ बिकाना ॥ टेक ॥
निसु दिन लहर उठत अभि अंतर,
बिसरा पियना खाना ॥ १ ॥

(१) मोका। (२) बारीक।

गगन गुफा में कुंजगली है,
तेहि में जाइ समाना ॥ २ ॥
सहस कमल दल मानसरोवर,
तेहि बिच भँवर लुभाना ॥ ३ ॥
पलटूदास अमल बिनु अमली,
आठ पहर मस्ताना ॥ ४ ॥

५०

जानी जानी पिया हो,
तुमको पहिचानी ॥ टेक ॥
जब हम रहली बारी भोली,
तुम्हरो मरम न जानी ।
अब तो भागि जाहु पिया हम से,
तब हम मरद बखानी ॥ १ ॥
बहुत दिनन पर भेंट भई है,
फाग खेलन हम ठानी ।
धन सम्पत लै खाक मिली तन,
तजि कै मान गुमानी ॥ २ ॥
इँगला पिँगला सुखमन खेलै,
अजपा सखी सयानी ।
तुरिया नाँघि चली घर अपने,
झमकि झमकि झमकानी ॥ ३ ॥
प्रेम के रँग अबीर भरि थारी,
जोति में जोति समानी ।
पलटू जीते हारि चले पिय,
ना कछु लाभ न हानी ॥ ४ ॥

५१

जो पिय के मन मानी रे,
सोइ नारि सयानी ॥ टेक ॥
पीतम हमरे पाती पठाई,
देखि देखि मुसुकानी ।
बाँचत पाती जुड़ानी छाती,
आपु में उलटि समानी ॥ १ ॥
भूषन भोजन नींद न भावै,
देखत रूप अघानी ।
लोग कहैं सखि लाज करो तुम,
हम चेतन है बौरानी ॥ २ ॥
रंग महल में जाइ के बैठी,
ऋतु बसंत जहँ आनी ।
सुखमन गावै भाव बतावै,
देखि नाच हरखानी ॥ ३ ॥
पलटुदास असमान फोरि कै,
सबद की करै बखानी ।
पुतरी लोन कि सिंधु समानी,
उलटि कहै को बानी ॥ ४ ॥

५२

पिया है प्रेम का प्याला ।
हुआ मन मस्त मतवाला ॥ १ ॥
भया दिल होस से भाई ।
बेहोसी जगत बिसराई ॥ २ ॥
बिंद में नाद का मेला ।
उलटि के खेल यह खेला ॥ ३ ।

जोग तजि जुक्ति को पाई।
जुक्ति तजि रूप दरसाई॥ ४॥
रूप तजि आपु को देखा।
आपु में पवन की रेखा॥ ५॥
उसी की गिरह संसारा।
पलटूदास है न्यारा॥ ६॥

५३

हरि रस छकि मतवाला है,
वा के लगी है खुमारी॥ टेक॥
सात सरग की बात बतावै।
देखत कै वह बाला[1] है॥ १॥
तीन लोक की एक चाल है।
वा की उलटी चाला है॥ २॥
नहिं मुद्रा नहिं भेष बनावै।
जपता अजपा माला है॥ ३॥
ज्ञान मँहै उनमत्त रहतु है।
भूला जग जंजाला है॥ ४॥
भूख पियास नहीं कछु वा के।
लगै न गरमी पाला है॥ ५॥
पलटुदास जिन हरि रस चाखा।
पिये न दूजा प्याला है॥ ६॥

५४

संतन सँग निसि दिन जागौंगी,
जागौंगी सँग लागौंगी॥ टेक॥
तन मन धन न्योछावर करि कै।
पुलकि पुलकि चित पागौंगी॥ १॥

---

(१) लड़का, कम-उमर।

सयन[1] करत कै पाँव दाबिहौं।
भक्ति दान बर माँगौंगी ॥ २ ॥
सीत प्रसाद पेट भरि खैहौं।
चौरासी घर त्यागौंगी ॥ ३ ॥
पलटुदास जो दाग करम को।
उलटि दाग फिर दागौंगी ॥ ४ ॥

५५

सतगुरु को घर लै आवौंगी,
फूलन सेज बिछावौंगी ॥ टेक ॥
सरगुन दारि कै दाल बनैहौं।
निरगुन भात रिन्हावौंगी ॥ १ ॥
प्रेम प्रीति कै चौक पुरैहौं।
सबद कै कलस धरावौंगी ॥ २ ॥
रतन जड़ित की चौकी पर लै।
सतगुरु को बैठावौंगी ॥ ३ ॥
ज्ञान कै थार सुमति कै झारी।
सतगुरु कँहै जेंवावौंगी ॥ ४ ॥
तत्त गारि कै अतर लगावौं।
त्रिकुटी महँ पौढ़ावौंगी ॥ ५ ॥
पलटुदास सोवन लगे सतगुरु।
सुखमन बेनियाँ डोलावौंगी ॥ ६ ॥

५६

मैं जानौं पिय मोर,
पिया नहिँ आपन सजनी ॥ टेक ॥
पिय मोर चंद चकोर भये हम,
आग चुनत तन तजनी ॥ १ ॥

(१) नींद।

हम धन कमल पिया मोर सूरुज,
गगन देखि मुख गजनी ॥ २ ॥
मैं पतंग पिय दीपक मोरा,
अनचाहत सँग भजनी ॥ ३ ॥
पलटूदास जाहि तन लागी,
कल न परै दिन रजनी ॥ ४ ॥

५७

सैयाँ के बचन गड़ि गे मोरे हिय में ॥ टेक ॥
गगन महल पिय मोहिं गुहराइन्हि,
सबद स्रवन सुनि कल नहिं जिय में ॥ १ ॥
भेद भरी तन कै सुधि नाहीं,
यह मन जाइ बसो मोरे पिय में ॥ २ ॥
खोजत खोजत हारि रह्यो है,
मथि मथि छाछ निकारै जस घिय में ॥ ३ ॥
पलटुदास के गोविँद साहिब,
आइ मिले मोहिं प्रेम गलिय में ॥ ४ ॥

५८

हम भजनीक में नाहीँ अवधू,
आँखि मूँदि नहिँ जाहीं ॥ टेक ॥
इक भजनीक भजन है इक ठो,
तब वह भजन मैँ जावै ।
भजनी भजन एक भा दूनोँ
वा के भजन न आवै ॥ १ ॥
खसम की मजा परी है जिन को,
सो क्या [illegible] पावै ।

हुमा[1] पच्छी रहै गगन में,
वा के जगत न भावै ॥ २ ॥
बुंद परा सागर के माहीं,
वह ना बुंद कहावै ।
लोन की डेरी[2] परी पानी में,
कहवाँ से फिरि पावै ॥ ३ ॥
तेल कि धार लगी निसि बासर,
जोति में जोति समानी ।
पलटूदास जो आवै जावै,
सो चौथाई ज्ञानी ॥ ४ ॥

५९

रँगि ले रंग करारी है,
फिर छुटै न धोये ॥ टेक ॥
ज्ञान को माट ताहि बिच बोरो,
मन बुधि चित रँग डारी है ॥ १ ॥
तन मन धन सब देइ रँगाई,
रंग मजीठी[3] भारी है ॥ २ ॥
रंग बहुत यह सोखि लेइगी,
बहुत दिनन की सारी है ॥ ३ ॥
सतसंगति में बैठि रँगावै,
सोइ पतिब्रता नारी है ॥ ४ ॥
पलटूदास पहिरि के निकरै,
अपने पिय की प्यारी है ॥ ५ ॥

६०

गाँठि परी पिय बोले न हम से ॥ टेक ॥

(१) स्वर्ग की एक चिड़िया जिस की छाया पड़ने से आदमी बादशाह हो जाता है ।

निसि दिन जागौं मैं पिय की सेजियां।
नैना अलसाने निकरि गे घर से ॥ १ ॥
जो मैं जनतिउँ पिय रिसियैहैं।
काहे को प्रीति लगौतिउँ अस ठग से ॥ २ ॥
अपने पिय को मैं बेगि मनैहौं।
सो तकसीर होत प्रभु जन से ॥ ३ ॥
सुनि मृदु बचन पिया मुसुकाने।
पलटुदास पिय मिले बड़े तप से ॥ ४ ॥

६१

राम तो हितकारी मेरे, और न कोई आस है ॥ टेक ॥
जब से दरस दीन्हा, प्रान उन हर लीन्हा।
तन की बिसरी सुधि, सही जक्त उपहास है ॥ १ ॥
प्रेम की फाँसी बाझी, जक्त की लाज त्यागी।
उठी अकुलाय मानो, सोवत से जाग है ॥ २ ॥
कहत है पलटूदास, तजहु सकल आस।
एक ही भरोसा राखौ, एक ही बिस्वास है ॥ ३ ॥

६२

मेरा मन जोगियें हर लीन्हा,
ना जानौं क्या कीन्हा ॥ टेक ॥
तन मन की सुधि रही न एकौ,
परी प्रेम की फाँसी।
यहि जोगिया के कारन माई,
सहौं जगत उपहासी ॥ १ ॥
भूख न लागै नींद न आवै,
छुटा अन्न औ पानी।
यहि जोगिया की अजब सुरति पर,
देखत भइउँ दिवानी ॥ २ ॥

जब से दृष्टि परी जोगी पर,
कल न परै दिन राती।
यहि जोगिया के कारन माई,
जरौं तेल बिनु बाती ॥ ३ ॥
प्रान करौं न्योछावर जोगी पर,
लोक लाज मैं त्यागा।
पलटूदास कहौं मैं का से,
ये जोगियै मन लागा ॥ ४ ॥

॥ बिश्वास ॥

६३

मैं जग की बात न मानौंगी।
ठान आपनी ठानौंगी ॥ १ ॥
कहे सुने से खाँड़ आपनी।
नाहिँ धूरि मैं सानौंगी ॥ २ ॥
कहे सुने से हीरा आपनो।
नाहिँ काँच मैं आनौंगी ॥ ३ ॥
जग की ओर तनिक नहिँ ताकौं।
सतसंगति पहिचानौंगी ॥ ४ ॥
पलटूदास कहे से का भा।
जो जानौं सो जानौंगी ॥ ५ ॥

॥ सूरमा ॥

६४

समुझि बूझि रन चढ़ना साधो,
खूब लड़ाई लड़ना है ॥ टेक ॥
दम दम कदम पड़ै आगे को,
पीछे नाहिँ पछड़ना है।

तिल तिल घाव लगै जो तन में,
खेत सेती क्या टरना है ॥ १ ॥
सबद खैंचि समसेर[1] जेर कर,
उन पाँचो को धरना है ।
काम क्रोध मद लोभ कैद कर,
मन कर ठौरै मरना है ॥ २ ॥
खड़ा रहै मैदान के ऊपर,
उन की चोट सँभरना है ।
आठ पहर असवार सुरत पर,
गाफिल नाहीँ पड़ना है ॥ ३ ॥
सीस दिहा साहिब के ऊपर,
किस की डेर अब डेरना है ।
पलटू बाना रुंड[2] के ऊपर,
अब क्या दूसर करना है ॥ ४ ॥

६५

सो रजपूत जा को काया कोट ॥ टेक ॥
काम क्रोध मन में मउवास[3] ।
इन दुष्टन को देइ निकास ॥ १ ॥
पाँच सिपाह जगीरीदार ।
नित उठि मन से करते रार ॥ २ ॥
इन पाँचो को डारो मार ।
गढ़ भीतर तुमहीँ सरदार ॥ ३ ॥
लोभ मोह यह करिहैँ चोट ।
जौँ लगि पैहैँ तिल भर खोट ॥ ४ ॥
पलटूदास सोई रजपूत ।
मन को मारि कै होइ सपूत ॥ ५ ॥

(१) तलवार । (२) धड़ । (३) चोर ।

॥ उपदेश ॥

६६

बनत बनत बनि जाइ, पड़ा रहै संत के द्वारे ॥ टेक ॥
तन मन धन सब अरपन कै कै, धका धनी को खाय ॥ १ ॥
[illegible]ा होय टरै नहिँ टारे, लाख कहै समुझाय ॥ २ ॥
[illegible] बिरित पावै सोइ खावै, रहै चरन लौ लाय ॥ ३ ॥
[illegible]दास काम बनि जावै, इतने पर ठहराय ॥ ४ ॥

६७

लगी है दाया की कोइ करैगा सौदा ॥ टेक ॥
लादै को जस लादेन्हि अपजस,
परि गइ फाँसी माया की ॥ १ ॥
नफा को आएन्हि मूर गँवाएन्हि,
माल जगातिन[1] खाया की ॥ २ ॥
बगल में लरिका सहर ढँढोरो,
नाहिँ लेइ सुधि काया की ॥ ३ ॥
पलटुदास सब जगत भुलाना,
लखि परछाहीँ छाया की ॥ ४ ॥

६८

मितऊ देहला न जगाय, निंदिया बैरिन भैली ॥ टेक ॥
की तो जागै रोगी भोगी, की चाकर की चोर ।
की तो जागै संत बिरहिया, भजन गुरू कै होय ॥ १ ॥
स्वारथ लाय सभै मिलि जागैँ, बिन स्वारथ ना कोय ।
परस्वारथ को वह नर जागै, जापै किरपा गुरु की होय ॥ २ ॥
जागे से परलोक बनतु है, सोये बड़ दुख होय ।
ज्ञान खरग लिये पलटू जागै, होनी होय सो होय ॥ ३ ॥

६९

बनिया समुझ के लाद लदनियाँ ॥ टेक ॥

(१) कर लेने वाले ।

यह सब मीता काम न आवै,
सँग न जाइ परधनियाँ ॥ १ ॥
पाँच मने की पूँजी राखत,
होइगे गर्ब गुमनियाँ ॥ २ ॥
करि ले भजन साध की सेवा,
नाम से लाव लगनियाँ ॥ ३ ॥
सौदा चाहै तो याँही करि ले,
आगे न हाट दुकनियाँ ॥ ४ ॥
पलटुदास गोहराय कहत हैं,
आगे देस निरपनियाँ ॥ ५ ॥

७०

को खोलै कपट किवरिया हो,
सतगुरु बिन साहिब ॥ टेक ॥
नैहर में कुछ गुन नहिँ सीख्यो,
ससुरे में भई फुहरिया हो ।
अपने मन की बड़ी कुलवंती,
छुए न पावै गगरिया हो ॥ १ ॥
पाँच पचीस रहै घट भीतर,
कौन बतावै डगरिया हो ।
पलटूदास छोड़ि कुल जतिया,
सतगुरु मिले सँघतिया हो ॥ २ ॥

७१

अब से खबरदार रहु भाई ॥ टेक ॥
सतगुरु दीन्हा माल खजाना,
राखो जुगत लगाई ।
पाव रती घटने नहिँ पावै,
दिन दिन होत सवाई ॥ १ ॥

छिमा सील की अलफी पहिनो,
ज्ञान लँगोटि लगाई।
दया कि टोपी सिर पर दै के,
और अधिक बनि आई ॥ २ ॥
बस्तु पाइ गाफिल मति रहना,
निसु दिन करो कमाई।
घट के भीतर चोर लगतु हैं,
बैठे घात लगाई ॥ ३ ॥
तन बन्दूक सुमति के सिँगरा,
ज्ञान के गज ठहकाई।
सुरति पलीता हर दम सुलगै,
कस पर राख चढ़ाई ॥ ४ ॥
बाहर वाला खड़ा सिपाही,
ज्ञान गम्य अधिकाई।
पलटूदास आदि के अदली,
हर दम लेत जगाई ॥ ५ ॥

७२

साहिब मेरा सब कुछ तेरा,
अब नाहीँ कुछ मेरा है ॥ १ ॥
यहि हमता ममता के कारन,
चौरासी किहा फेरा है ॥ २ ॥
मृग-जल निरखि के तृषा बुझै नहिँ,
सूखे अटका बेरा[1] है ॥ ३ ॥
यह संसार रैन का सुपना,
रूपा भ्रम सीपी केरा है ॥ ४ ॥

(१) नाव।

पलटुदास सब अरपन कीन्हा,
तन मन धन औ देरा है ॥ ५ ॥

७३

टुक हरि भजि लेहु, मन मेरे यार मुसाफिर ॥ टेक ॥
पानी पवन अगिन से जोरा, धरती और अकासा ।
पाँच तत्तु का महल उठाया, तहाँ लिया तुम बासा ॥ १ ॥
को तुम कवन कहाँ तें आया, बारम्बार ठगाया ।
इतनी बात भुलै के कारन, फिरि फिरि गोता खाया ॥ २ ॥
इतनी बात चेत नहिं तुमको, जिस कारज को आया ।
माया मोह लालच के कारन, अपनो रूप भुलाया ॥ ३ ॥
मन के कारन रामचन्द्रजी, गये गुरू के पासा ।
खसर फसर में कारज नाहीं, कहते पलटूदासा ॥ ४ ॥

७४

साहिब के दरबार में कमी कुछ नाहीं ।
चूक चाकरी में परी दुबिधा मन माहीं ॥ १ ॥
बेनियाज[1] हाजिर रहै तकसीर हमारी ।
कुसियारी के कीट में किन चारा डारी ॥ २ ॥
अकिल आपनी क्या करै अकीन[2] न आया ।
बुन्द से पिंड सँवारिया तिसको बिसराय ॥ ३ ॥
खसम बिसारै आपना सोइ काफिर भाई ।
पीर पराई ना लखै सोइ जाति कसाई ॥ ४ ॥
जाति वही अशराफ है दिल दर्द को आनी ।
पलटुदास सोइ पाक है दुर्वेस निसानी ॥ ५ ॥

७५

सहस कमल दल फूला है, तहवाँ चलु भँवरा ॥ टेक ॥
यह संसार रैन को सुपना, कहा फिरै तू भूला है ॥ १ ॥

---

(१) बिना प्रार्थना या माँग के। (२) निश्चय।

पलटूदास उलटिगा भँवरा, जाय गगन बिच फूला है ॥ २ ॥

७६

साहिब से परदा का कीजै।
भरि भरि नैन निरखि लीजै ॥ १ ॥
नाचै चली घूँघट क्यों काढ़ै।
मुख से अंचल टारि दीजै ॥ २ ॥
सती होय का सगुन बिचारै।
कहि के माहुर[1] क्या पीजै ॥ ३ ॥
लोक बेद तन मन की डेर है।
प्रेम रंग में क्या भीजै ॥ ४ ॥
पलटूदास होय मरजीवा[2] ।
लेहि रतन नहिं तन छीजै ॥ ५ ॥

७७

गुप्त मते की बात जगत में फहस[3] न कीजै ॥ टेक ॥
पात्र सुपात्र देखि जब लीजै, बस्तु ताहि को दीजै ॥ १ ॥
यह संसार मोम का कपड़ा, जल बिच कोर न भींजै ॥ २ ॥
तजि बकवाद मौन ह्वै रहिये, बोलत काया छीजै ॥ ३ ॥
पलटू कहै सुनो भाइ साधो, वचन गाँठि गहि लीजै ॥ ४ ॥

७८

नहीं मुख राम गाओगे। आगे दुख बड़ा पाओगे ॥ १ ॥
राम बिन कौन तारैगा। पकड़ जमदूत मारैगा ॥ २ ॥
कबौं[4] सतसंग ना कीन्हा। भूखे को नाहिं कुछ दीन्हा ॥ ३ ॥
माया औ मोह में भूले। कुटुम परिवार लखि फूले ॥ ४ ॥
पुछै धर्मराज जब भाई। बचन मुख नाहिं कहि आई ॥ ५ ॥
पलटूदास लखि रोया। सुघर[5] तन पाय के खोया ॥ ६ ॥

---

(१) विष। (२) जो मोती निकालने के लिये समुद्र में डुबकी लगाते हैं।
(३) प्रगट। (४) कभी। (५) सुन्दर।

॥ भेद ॥

७६

पलटू कहै साच कै मानो।
और बात झूँठ कै जानो ॥ १ ॥
जहवाँ धरनी नाहिँ अकासा।
चाँद सुरज नाहीं परगासा ॥ २ ॥
जहवाँ पवन जाय ना पानी।
बेद कितेब मरम ना जानी ॥ ३ ॥
जहवाँ ब्रह्मा बिस्नु न जाहीं।
दस औतार न तहाँ समाहीं ॥ ४ ॥
आदि जोति ना बसै निरंजन।
जहवाँ सुन्न सबद नहिं गंजन ॥ ५ ॥
निराकार ना उहाँ अकारा।
सत्य सबद नाहीं बिस्तारा ॥ ६ ॥
जहवाँ जोगी जोग न पावै।
महादेव ना तारी[1] लावै ॥ ७ ॥
उहवाँ हद अनहद ना जावै।
बेहद वह रहनी ना पावै ॥ ८ ॥
जहवाँ नाहिं अगिन परगासा।
पाँच तत्तु ना चलता स्वासा ॥ ९ ॥
ब्रह्म ज्ञान ना पहुँचै उहवाँ।
अनुभौ पद ना बोलै तहवाँ ॥ १० ॥
सात सर्ग अपवर्ग न कोई।
पिंड उहाँ ब्रह्मण्ड न होई ॥ ११ ॥
जहवाँ करता करै न पावै।
सिद्धि समाधि ध्यान ना लावै ॥ १२ ॥

---

(१) ध्यान।

अजपा गिरा[1] लंबिका[2] नाहीं ।
जगमग झिलिमिलि उहाँ न जाहीं ॥ १३ ॥
सोहं सोहं उहाँ न बोलै ।
चलै न जुक्ति सुरति ना डोलै ॥ १४ ॥
उहवाँ नाहिं रहै अबिनासी ।
पूरन ब्रह्म सकै ना जासी ॥ १५ ॥
निरभौ नाद नहीं ओंकारा ।
निरगुन रूप नहीं बिस्तारा ॥ १६ ॥
पलटूदास तहाँ चलि गया ।
आगे है पाछे ना भया ॥ १७ ॥
पलटू देखि हाथ को मलै ।
आगे कहै तो परदा खुलै ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

आदि अंत अरु मध्य नहिँ, रंग रूप नहिँ रेख ।
गुप्त बात गुप्तै रही, पलटू तोपा[3] देख ॥ १९ ॥

८०

आदि अंत ठिकानी बातैं,
कहौं आपनी देखी हो ॥ टेक ॥
राह अजान पंथ को पावै,
त्रिकुटी घाट उतारा हो ।
अबिगत नगर जाय जहँ पहुँचे,
मारग बिहँग बिचारा हो ॥ १ ॥
बायें चन्द सूर है दहिने,
सुखमन सुरति समानी हो ।
सोहं सोहं सुन में बोलै,
वही सब्द की खानी हो ॥ २ ॥

(१) बानी । (२) गले के भीतर की घाँटी । (३) ढक दिया ।

तुरिया बैठा जाग्रत जोगी,
लगी उनमुनी तारी हो।
इँगला माहीँ सहज समानी,
पिंगला पवन अहारी हो ॥ ३ ॥
हद पर बैठे सतगुरु बोलैं,
बेहद बोलै चेला हो।
अजपा जाप छुटी है दुतिया,
अनुभव भया अकेला हो ॥ ४ ॥
सुन्न संबत द्वादस है अठवाँ,
चार तत्व से न्यारा हो।
पलटू यह टकसारी सिक्का,
परखैगा कोइ प्यारा हो ॥ ५ ॥

८१

कौन करै बनियाई अब मोरे, कौन करै बनियाई ॥ टेक ॥
त्रिकुटी में है भरती मेरी, सुखमन में है गादी।
दसयें द्वारे कोठी मेरी, बैठा पुरुष अनादी ॥ १ ॥
इँगला पिँगला पलरा दूनौं, लागि सुरति की जोती।
सत्त सबद की डाँड़ी पकरौं, तौलौं भरि भरि मोती ॥ २ ॥
चाँद सुरज दोउ करें रखवारी, लगी तत्त की ढेरी।
तुरिया चढ़ि के बेचन लागे, ऐसी साहिबी मेरी ॥ ३ ॥
सतगुरु साहिब किहा सिपारस, मिली राम मोदियाई।
पलटू के घर नौबति बाजै, निति उठि होत सवाई ॥ ४ ॥

८२

चलहु सखी वहि देस, जहवाँ दिवस न रजनी ॥ टेक ॥
पाप पुन्न नहिं चाँद सुरज नहिं,
नहीं सजन नहिं सजनी ॥ १ ॥

धरती आग पवन नहिं पानी,
नहिं सूतै नहिं जगनी ॥ २ ॥
लोक बेद जंगल नहिं बस्ती,
नहिं संग्रह नहिं त्यगनी ॥ ३ ॥
पलटूदास गुरू नहिं चेला,
एक राम रम रमनी ॥ ४ ॥

८३

साधो भाई उहवाँ के हम बासी,
जहवाँ पहुँचे नहिं अबिनासी ॥ टेक ॥
जहवाँ जोगी जोग न पावै,
सुरति सबद नहिं कोई ।
जहवाँ करता करे न पावै,
हम हीं करैं सो होई ॥ १ ॥
ब्रह्मा बिस्नु नाहिं गमि सिव की,
नहीं तहाँ अबिनासी ।
आदि जोति उहाँ अमल न पावै,
हमहीं भोग बिलासी ॥ २ ॥
त्रिकुटी सुन्न नाहिं है उहवाँ,
दंडमेरु ना गिरिवर ।
सुखमन अजपा एको नाहीं,
बंकनाल ना सरवर ॥ ३ ॥
जहवाँ पाँच तत्त ना स्वासा,
जममग झिलिमिलि नाहीं ।
पलटूदास की औघट घाटी,
बिरला गुरमुख जाही ॥ ४ ॥

८४

गगन बोलै इक जोगी है, सुनु चित दे सखी री ॥ टेक ॥

खाय न पीवै मरै न जीवै, नाम सुधा रस भोगी है ॥ १ ॥
वा के रंग रूप नहिं रेखा, देखत परम बिरोगी है ॥ २ ॥
ज्ञान दृष्टि से नजर परतु है, दसयें द्वार इक चोंगी है ॥ ३ ॥
पलटूदास सुनैगा सोई, चढ़ि सतगुरु की डोंगी है ॥ ४ ॥

८५

साधो भाई वह पद करहु बिचारा,
जो तीनि लोक से न्यारा ॥ टेक ॥
छर अच्छर चौंतिस में कहिये,
सहस नाम तेहिं माहीं ।
निःअच्छर वह जुदा रहतु है,
लिखे पढ़े में नाहीं ॥ १ ॥
सुन्न गगन में सबद उठतु है,
सो सब बोल में आवै ।
निःसबदी वह बोलै नाहीं,
सो सत सबद कहावै ॥ २ ॥
रहनी रहै कथै फिर कथनी,
उन को कहिये ज्ञानी ।
रहनी कथनी दूनों छूटै,
सो पूरा विज्ञानी ॥ ३ ॥
सुरति लगावै ध्यान धरै जो,
सो सब आप में आवै ।
सुरति ध्यान एकौ में नाहीं,
सो अजपा कहवावै ॥ ४ ॥
जोग करै सो रूढ़ मता है,
मुक्ति मँहे सब सब आवै ।
छोड़ै रूढ़ अरूढ़ को पावै,
साची मुक्ति कहावै ॥ ५ ॥

हद बेहद को अनुभै कहिये,
निरअनुभै ह्वै जावै ।
पलटुदास बेहद में बैठै,
सो वहि पद को पावै ॥ ६ ॥

॥ शान्ति ॥

८६

चित मेरा अलसाना, अब मोसे बोलि न जाइ ॥ टेक ॥
देहरी लागै परबत मो को, आँगन भया है बिदेस ।
पलक उघारत जुग सम बीतै, बिसरि गया सन्देस ॥१॥
विष के मुए सेती मनि जागी, बिल में साँप समाना ।
जरि गया छाछ भया घिव निरमल, आपुइ से चुपियाना[1] ॥२॥
अब ना चलै जोर कछु मेरा, आन के हाथ बिकानी ।
लोन की डरी परी जल भीतर, गलि के होइ गइ पानी ॥३॥
सात महल के ऊपर अठएँ, सबद में सुरति समाई ।
पलटूदास कहौं मैं कैसे, ज्यों गूँगे गुड़ खाई ॥४॥

८७

सत बेधि रहो है[2], का से यह भेद कहौं ॥ टेक ॥
रोम रोम में नाद उठतु है, जग गति जाइ जरै ।
हाल हमारी कोऊ ना जानै, और की और करै ॥१॥
पुलकित गात पलक न परै मोर, टकटक ताकि रहो ।
सिथिल भये मुख बचन न आवै, ज्यों ठगहार गहो ॥२॥
यह अचरज का से अब कहिये, जिन देखा सोइ जानै ।
होइ अचरज अचरज को खोजै, तब अचरज पहिचानै ॥३॥
पलटू हेरत आपु हिरानी, केहि बिधि करै सम्हार ।
होइ अचेत झुकि झुकि परै चेतन, ऐसी हाल हमार ॥४॥

---

(१) चुप हुआ । (२) दूसरे पाठ में "सत बेधि रहो" की जगह "मन मोज मिलो" है ।

॥ साच ॥

८८

साचा हरि दरबार, झूठा टिकै न कोई ॥ टेक ॥
झूठा छिपै न लाख छिपावै, अंत को होत उघार ॥१॥
झूँठा रंग रँगै जो कोई, चटक रहै दिन चार ॥२॥
हरि की भक्ति सहज है नाहीं, ज्यों चोखी तरवार ॥३॥
पलटूदास हाथ अपने से, सिर को लेइ उतार ॥४॥

॥ दीनता ॥

८९

जाय मनाओं मैं साजन को,
केहि भाँति सखी री ॥ टेक ॥
भूली फिरों राह न पाओं,
सतगुरु चाही सँग लागन को ॥ १ ॥
मैं मूरख मन मलिन भयो है,
ज्ञान चाही तन माँजन को ॥ २ ॥
भूख पियास छुटै नहिं मेरी,
पाँच भूत चाही त्यागन को ॥ ३ ॥
मोह मया निद्रा रहै घेरे,
आठ पहर चाही जागन को ॥ ४ ॥
पलटूदास साध की संगति,
उठि उठि मन चाहै भागन को ॥ ५ ॥

॥ अनुभव ज्ञान ॥

९०

कहिबे से क्या भया भाई, जब ज्ञान आपु से होइ ॥ टेक ॥
अललपच्छ के चेटुका[1], वा को कौन करै उपदेस ।
उलटि मिलै परिवार में, वा से कौन कहै संदेस ॥ १ ॥

---

(१) बच्चा ।

ज्यों सिसु होत मराल[1] के, वा को कौन सिखावै ज्ञान ।
नीर कँहै अलगाइ कै, वह छीर करतु है पान ॥ २ ॥
सिंह के बच्चा गिरि पर्‌यो, वह खेलत तुरत सिकार ।
वा को कौन सिखावई, वो हस्ती डारत मार ॥ ३ ॥
संत को कौन सिखावता, उन्ह अनुभव भा परकास ।
सिखई बुद्धि केहि काम की, जो हृदय न पलटूदास ॥ ४ ॥

॥ बाचक ज्ञान ॥

९१

बाचक ज्ञान न नीका ज्ञानी,
ज्यों कारिख का टीका ॥ टेक ॥
बिनु पूँजी को साहु कहावै,
कौड़ी घर में नाहीं ।
ज्यों चोकर के लड्डू खावै,
का सवाद तेहि माहीं ॥ १ ॥
ज्यों सुवान[2] कुछ देखि कै भूँकै,
तिस ने तौ कछु पाई ।
वा की भूँक सुने जो भूँकै,
सो अहमक कहवाई ॥ २ ॥
बातन सेती नहीं होइ राजा,
नहिं बातन गढ़[3] टूटै ।
मुलुक मँहै तब अमल होइगा,
तीर तुपक जब छूटै ॥ ३ ॥
बातन से पकवान बनावै,
पेट भरै नहिं कोई ।
पलटूदास करै सोइ कहना,
कहे सेती क्या होई ॥ ४ ॥

---

(१) हंस । (२) स्वान=कुत्ता । (३) क़िला ।

॥ अद्वैत ॥

९२

जोई जीव सोई ब्रह्म एकै है,
दृष्टि अपानी चर्मा ॥ टेक ॥
जिव से जाइ ब्रह्म तब होता,
जिव बिनु ब्रह्म न होई।
फल में बीज बीज में फल है,
अवर न दूजा कोई ॥ १ ॥
नीर में लहर लहर में पानी,
कैसे कै अलगावै।
छाया में पुरुस पुरुस में छाया,
दुइ कहवाँ से पावै ॥ २ ॥
अच्छर में मसी[1] मसी में अच्छर,
दुइ कहवाँ से कहिये।
गहना कनक कनक में गहना,
समझि चुप्प करि रहिये ॥ ३ ॥
जीव में ब्रह्म ब्रह्म में जिव है,
ज्ञान समाधि में सूझै।
माटि में घड़ा घड़ा में माटी,
पलटूदास यों बूझै ॥ ४ ॥

॥ मन ॥

९३

मन बनिया बान न छोड़ै ॥ टेक ॥
पूरा बाट तरे खिसकावै, घटिया को टकटोरै।
पसगा माँहि करि चतुराई, पूरा न कबहुँ तौलै ॥ १ ॥
घर में वा के कुमति बनियाइन, सबहिन को झकझोरै।
लड़िका वा का महा हरामी, इमरित में विष घोरै ॥ २ ॥

(१) स्याही।

पाँच तत्त का जामा पहिरे, ऐंठा गुइँठा डोलै।
जनम जनम का है अपराधी, कबहूँ साच न बोलै ॥ ३ ॥
जल में बनिया थल में बनिया, घट घट बनिया बोलै।
पलटू के गुरु समरथ साईं, कपट गाँठि जो खोलै ॥ ४ ॥

९४

सो बनिया जो मन को तौलै ॥ टेक ॥
मनहिं के भीतर बसी बजार।
मनहीं आपु खरीदनहार ॥ १ ॥
मनहीं में लेन देन मनहिं दुकान।
मनहीं में मन को गुजरान ॥ २ ॥
मनहीं में लादै उलदै अनत न जाय।
मनहिं की पैदा मनहिं में खाय ॥ ३ ॥
मनहीं में तराजू मनहिं में सेर।
पलटूदास सब मनहीं का फेर ॥ ४ ॥

॥ माया ॥

९५

माया हमें अब जनि बगदावो,
तुम तो ठगिनी जग बौरावो ॥ टेक ॥
देवन के घर भइउ अपसरा,
जोगी के घर चेली।
सुर नर मुनि तो सब ही खायो,
होइ अलमस्त अकेली ॥ १ ॥
कृस्न कँहै गोपी होइ खायो,
राम कँहै होइ सीता।
महादेव काँ पारवती होइ,
तो से कोउ न जीता ॥ २ ॥

बिसुन कँहै लछमी होइ खायो,
ब्रह्मा स्रिस्टि बड़ाई।
सिंगी रिषि को बन में खायो,
तुम्हरी फिरी दुहाई ॥ ३ ॥
दौलत होइ तिनु[1] लोकहि खायो,
गिरही की है नारी।
पलटूदास के द्वार खड़ी है,
लौंड़ी होइ हमारी ॥ ४ ॥

९६

हम से फरक रहु दूर,
माया मौत तुलानी ॥ टेक ॥
आन के लेखे तुम अमृत लागहु,
हमरे लेखे जस पानी।
हमरे तुंह लौंड़ी अस नाहीं,
औरन कै लेखे घर रानी ॥ १ ॥
औरन के लेखे तू परवत[2],
हम राई सम जानी।
सगरो अमल करेहु तुंह माया,
हमसे रहौ अलगानी ॥ २ ॥
तीन लोक तुंह निगल गई है,
तेहि पर नाहिं अघानी।
पलटुदास कह वकसहु माया,
नरक कि तुंही निसानी ॥ ३ ॥

९७

सोई है अतीत जो तो माया तें अतीत ॥ टेक ॥

(१) तीनों। (२) पहाड़।

माया ठगनी ठगा संसार।
सुर नर मुनि बोरे मँझधार ॥ १ ॥
माया बोलै मीठी बोल।
गाँठ से ज्ञान ध्यान लेइ खोल ॥ २ ॥
माया है यह काली नाग।
(जेहि काँ) काटै पानी सकै न माँग ॥ ३ ॥
पलटूदास माया यह काल।
भागि बचे साहिब के लाल ॥ ४ ॥

॥ कुमति ॥

९८

जहाँ कुमति कै बासा है।
सुख सपनेहु नाहीं ॥ टेक ॥
फोरि देत घर मोर तोर करि।
देखै आपु तमासा है ॥ १ ॥
कलह काल दिन रात लगावै।
करै जगत उपहासा है ॥ २ ॥
निरधन करै खाये बिनु मारै।
आछत अन्न उपवासा है ॥ ३ ॥
पलटूदास कुमति है भोड़ी[1]।
लोक परलोक दोउ नासा है ॥ ४ ॥

॥ पंडित ॥

९९

पढ़ि पढ़ि क्या तुम कीन्हा पंडित,
अपना रूप न चीन्हा ॥ टेक ॥
औरन को तुम ज्ञान बताओ
तुम को परै न बूझी।

(१) बुरी।

जस मसालची सबहिं दिखावै,
वा को परै न सूझी ॥ १ ॥
अपनी खबर नहीं है तुम को,
औरन को परमोधो ।
पढ़ना गुनना छोड़ि के पाँड़े,
अपनी काया सोधो ॥ २ ॥
इन्द्रियन से आजिज[1] तुम रहते,
इन्द्री मारि गिराओ ।
माया खातिर बकि बकि मरते,
मन अपनो समुझाओ ॥ ३ ॥
बुद्धि मँहै परबीन चतुर हौ,
खाँड़ धूरि में सानौ ।
पलटूदास कहै सुनु पाँड़े,
वचन हमारा मानौ ॥ ४ ॥

॥ कर्म भर्म निषेध ॥

१००

तिरथ में बहुत हम खोजा,
उहाँ तो नाहिं कुछ पाया ।
मूरति को पुजि पछिताने,
नजर में नाहिं कुछ आया ॥ १ ॥
मुए हम वर्त से करते,
वेद को सुना चित लाई ।
जोग औ जुगति करि थाके,
सजन की खबर नहिं पाई ॥ २ ॥
किया जप तप फेरि माला,
खोजा षट दरस में जाई ।

(१) आधीन, जेर ।

कोई ना भेद बतलावै,
सबै सतसंग गुहराई ॥ ३ ॥
परे जब संत के द्वारे,
संत ने आप सब कीन्हा।
दास पलटू जभी पाया,
गुरू के चरन चित लाया ॥ ४ ॥

१०१

वह दरबारा भारा साधो,
हिन्दू मुसलमान से न्यारा ॥ टेक ॥
मक्के रहे न ठाकुरद्वारा,
है सब में सब खोजनहारा ॥ १ ॥
नहिं दरगाह न तीरथ संगा,
गंगा नीर न तुलसी भंगा ॥ २ ॥
सालिराम न महजिद कोई,
उहाँ जनेव न सुन्नत होई ॥ ३ ॥
पढ़ै निवाज न लावै पूजा,
पंडित काजी बसै न दूजा ॥ ४ ॥
फेरै न तसबी जपै न माला,
ना मुरदा ना करै हलाला ॥ ५ ॥
मारै न सुवर जिबहे ना गाई,
कलमा भजन न राम खुदाई ॥ ६ ॥
एकादसी न रोजा करई,
डंडवत करै न सिरदा[1] परई ॥ ७ ॥
पलटूदास दुई की किस्ती,
दोजख नर्क वैकुंठ न भिस्ती ॥ ८ ॥

(१) सिजदा।

॥ जाति भेद निषेध ॥

१०२

कोई जाति न पूछै हरि को भजै सो ऊँचा है ॥ १ ॥
कोटि कुलीन होइ ब्रह्मा सम सोभी उन से नीचा है ॥ २ ॥
सुपच अजामिल सदन रैदासा कौन बीज कै सींचा है ॥ ३ ॥
सेवरी भील बिदुर दासी सुत भाजी बैर गुलीचा[1] है ॥ ४ ॥
पलटूदास चढ़ी जब गनिका पकरि बिमान हरि खींचा है ॥ ५ ॥

॥ भक्त के लच्छण ॥

१०३

(छन्द)

भक्त के मैं कहूँ लच्छन साधु करहु बिचारनं ।
प्रथम दासा तनै करके सन्त से हित लावनं ॥ १ ॥
रहत चलि कै सन्त सेवा द्रव्य तन मन वारनं ।
तिलक कै अस्नान पूजा कर्म में चित लावनं ॥ २ ॥
तब उपजै बैराग मन में जोग पर चित धावनं ।
जोग से तब ज्ञान होवै ज्ञान भक्ति जगावनं ॥ ३ ॥
भक्त द्वादस अष्ट आज्ञा सोई सन्त परायनं ।
करै कर्म निकर्म ह्वैके सोई धर्म सनातनं ॥ ४ ॥
अष्ट सिधि नव निद्धि ठाढ़ी ताहि को बिसरावनं ।
जोग जीत अतीत माया सोई है अवधूतनं ॥ ५ ॥
कर्म इन्द्री ज्ञान इन्द्री एक रस करि राखनं ।
पाँच तत्त औ भूत पाँचो रैन दिवस जगावनं ॥ ६ ॥
बुद्धि चित हंकार जोगवे सोई है सन्यासनं ।
काम क्रोध औ मोह लालच ताहि को बिसरावनं ॥ ७ ॥
छुटै भूख पियास निद्रा सकल इन्द्री जीतनं ।
दुष्ट मित्र को एक जानै अस्तुति निन्दा निचिन्तनं ॥ ८ ॥

---

(१) जल्दी-जल्दी खाना ।

रहै रहनी ओट छोड़ै अली के मैदाननं ।
काना फुसकी बात छोड़ै ज्ञान चौड़ा बजावनं ॥ ९ ॥
इक पहर एकांत ह्वै के सुन्न ध्यान लगावनं ।
इक पहर सुन स्रवन हरि जस अर्थ सहित मिलावनं ॥ १० ॥
पहर भरि कै नाद रसना सकल जंत्र बजावनं ।
इक पहर कै कर्म किरिया रैन दिवस कटावनं ॥ ११ ॥
पदम आसन नाहिं छूटै आठ पहर लगावनं ।
करै संजम लेय ओगरा साध रहनी लच्छनं ॥ १२ ॥
दसो द्वारा मूँदि मेलै पवन जतन करावनं ।
मध्य त्रिकुटी गंग जमुना तहाँ आनि चढ़ावनं ॥ १३ ॥
चढ़ै गगन अकास गरजै द्वार दसम निकासनं ।
जोति झिलमिल झरै मोती हंस कँहै चुगावनं ॥ १४ ॥
सुरत से जब निरत होवै सुरत शब्द कहावनं ।
दिव्य दृष्टि बिलोकि सरवन सब्द सुरत मिलावनं ॥ १५ ॥
रंग ना कछु रूप रेखा तहाँ सब कछु देखनं ।
दास पलटू होय ऐसन सोई सन्त अलेखनं ॥ १६ ॥
एक मूल दुइ चक्र नाभी चित्र उद्र के बीचनं ।
बाम दक्खिन सब्द त्रिकुटी चक्र बिधी सुधारनं ॥ १७ ॥
चाँद सूर अकास आनै प्रान बैठि सुधारनं ।
अष्ट दल यह कँवल फूलै ध्यान कमठ लगावनं ॥ १८ ॥
मीन मारग पवन पंछी सेस चाल चलावनं ।
अर्ध उर्ध के बीच आसन खेल भेद मिलावनं ॥ १९ ॥
इँगला पिंगला सोधि सुखमन अजपा जाप जपावनं ।
नाद अनहद लंबिका सुर बंक नाल सोधावनं ॥ २० ॥
जाग्रत सूतै सुप्न जागै जाग्रत सुप्न सुषोपतिं ।
तुरिया सेती अतीत होवै सोई है आरूढ़नं ॥ २१ ॥

देहिक दैविक छुटै भवतिक सोइ अनन्य कहावनं ।
इन्द्री रहित बिछेप नाहीं सोई है आतीतनं ॥ २२ ॥
पुलक गात अनन्द मूरत काल ताहि न व्यापनं ।
अलमस्त है मुदगलित हस्ती सोई है परमहंसनं ॥ २३ ॥
निर्बिकार निर्बैर ह्वै के सान्ति मन में लावनं ।
एक ब्रह्म समान जानै दुतिया दूरि बहावनं ॥ २४ ॥
तेल धारा लगी निसि दिन सोहं सब्द सुहावनं ।
ऐसन जोगी रावला जो ताहि को आदेसनं ॥ २५ ॥
लिखै पढ़ै में नाहि आवै अच्छर नाहिं निरच्छरं ।
नाम सोई अनाम कहिये सदा सन्त सरूपनं ॥ २६ ॥
सात स्वर्ग अपवर्ग ऊपर ताहि चित्त लगावनं ।
कोटि परलय नाहिं पहुँचै तहाँ सन्त सिंघासनं ॥ २७ ॥
आठ लच्छ त्रिकाल मूरति अनहद तूर बजावनं ।
आवागवन से रहित होवै ऐसे सन्त को बन्दनं ॥ २८ ॥
अकल कला अनन्द मूरति लागि भजन अखंडनं ।
बिन्द से जो होय न्यारा सोई है अबिनासिनं ॥ २९ ॥
मन न बुद्धि न चित्त पहुँचै निराकार निरच्छरं ।
दास पलटू अकथ कथनी सोई साध समागतं ॥ ३० ॥
गगन मद्धे पदम आसन हमहिं हम गुहरावनं ।
बरै मानिक झरै मोती सोई है परम बिस्त्रवं ॥ ३१ ॥
कंचन काँच न भेद राखै पक्खा पक्खी त्यागनं ।
मोर तोर बिकार छूटै एक धारा धारनं ॥ ३२ ॥
दुष्ट मित्र को एक जानै अस्तुति निन्दा त्यागनं ।
दुक्ख सुख है एक दोऊ हरष सोक बिसारनं ॥ ३३ ॥
तजै आसा सकल जग की परम धरम संतोषनं ।
तत्त-दरसी भजन द्वादस सहज समाधि लगावनं ॥ ३४ ॥

संग्रह त्याग न जोग भोगी पाप पुन्य बिसारनं ।
चारि फल औ तीन गुन को बिषय तृन सम त्यागनं ॥ ३५ ॥
महा परलय ध्यान कीजे तहाँ इक ओंकारनं ।
ब्रह्म ज्ञान न जोग जप तप नेम नहिं आचारनं ॥ ३६ ॥
चारि बरन से होय न्यारा पंडिता षटदर्सनं ।
घाटि बाढ़ि न प्रीति कीजे एक धारा धारनं ॥ ३७ ॥
अजर जरै असाध साधै मर जीवै सोइ पावनं ।
साध कै तब छुटै साधन साध असाध मिलावनं ॥ ३८ ॥
मूल बिन अस्थूल सूच्छम अछै-बृच्छ फरावनं ।
उड़ै पंछी खाय फल को अमर पुरुष कहावनं ॥ ३९ ॥
अर्ध पुंड लिलाट रेखा चक्र अंग सुहावनं ।
चन्द्र हाँस सिंगार बीरी धुईं ध्यान जरावनं ॥ ४० ॥
सीस-फूल जड़ाव जूड़ा अंजन ज्ञान लगावनं ।
मानसी नथुनी नेह ढेंढ़ी सब्द माँग भरावनं ॥ ४१ ॥
बिबेक घँघरा तत्त सारी फुफुदी है बिस्वासनं ।
साधु सेवा अंग अँगिया रहनी बाजू-बन्दनं ॥ ४२ ॥
संतोष अंग सुगंध लावै बास चहुँ दिसि धावनं ।
सुरत निरत बर बाँधि घुँघुरू पारब्रह्म रिझावनं ॥ ४३ ॥
जीव ब्रह्म से भेद नाहीं सोई है पतिब्रर्तनं ।
दास पलटू होय ऐसन सोई है मम गुरुदेवनं ॥ ४४ ॥
भक्ति जोग कोइ करै अबिरल यही मन्त्र बिचारनं ।
सर्ब जीव समान जानै परम धर्म परायनं ॥ ४५ ॥
भक्ति है अनपायनी सद पावन पात्र के नायकं ।
कोटि जन्म सतसंग कैकै सुद्ध हृदय तब आवनं ॥ ४६ ॥
तरै कर यह मूल द्वारा और नाहिं उपायनं ।
भक्ति जोग है मूल टीका सब मन्त्र बिचारनं ॥ ४७ ॥

राम कृस्न उचारि रसना हृदय तत्त निरूपनं ।
सुरत सेल्ही जाप मुद्रा सोई संत परायनं ॥ ४८ ॥
ज्ञान गुदरी गले सोहै चन्द्र तिलक लिलाटनं ।
टोप सिर पर जोति झलकै प्रेम भभूत चढ़ावनं ॥ ४९ ॥
अड़बंद खोलहि निरत प्रति कुबरी है संतोषनं ।
धुईं ध्यान अकास जारै फामरी बिबेकनं ॥ ५० ॥
छिमा आसन सांति तुम्बा मेखली पर-स्वार्थनं ।
सब्द दोनों कान कुण्डल तत्त द्वादस पुस्तकं ॥ ५१ ॥
संजम माला पवन सुमिरन अजपा जाप जपावनं ।
अर्सठ तीरथ साधु सेवा गुफा पिंड बनावनं ॥ ५२ ॥
जटा सील सुभाव अचला भजन अमल चढ़ावनं ।
दास पलटू होय ऐसन सोई है आतीतनं ॥ ५३ ॥
काया कुण्डी पवन घोटा अमल है हरि नामनं ।
रहनी साफी तत्त प्याला ऐसोई है अचिंतनं ॥ ५४ ॥
संजम तोय तड़ाग पूरन ताहि बैठि नहावनं ।
धीरता सोइ पादुका है ताहि पर असवारनं ॥ ५५ ॥
मनै मूरति तनै देवल ताहि को अब पूजनं ।
गगन में मन मगन होवै चित्त पुहुप चढ़ावनं ॥ ५६ ॥
ब्रह्म ज्ञान त्रिसूल गल बिच मेखली मृगछालनं ।
खुसी भोजन दया डासन पान खाय प्रतीतनं ॥ ५७ ॥
भाव भक्ति को ओढ़ि ऊपर गगन मद्धे सूतनं ।
गरमी पाला एक जानै सीत धूप बराबरं ॥ ५८ ॥
चित्त चीपी ज्ञान डीबी ध्यान ईंधन लावनं ।
गंग जमुना बीच आसन तहाँ पवन चढ़ावनं ॥ ५९ ॥
फूटि गे ब्रह्मंड जबही सकल सिद्ध कहावनं ।
सहस दल तहँ कँवल फूला मानसरोवर बीचनं ॥ ६० ॥

गगन बीचे बजत मुरली सोहं सब्द सुहावनं ।
कुंजगली है साँकरी इक दूजा और न जावनं ॥ ६१ ॥
पवन की इक बहै सलिता बंक नाल के बीचनं ।
सहस धारा असी संगम रैन दिवस गुजारनं ॥ ६२ ॥
सुन्न में कछु नाहिँ सूझै तहाँ बहुत अँधेरनं ।
कड़क बिजुली तहाँ तड़पै जहाँ चित्त सम्हारनं ॥ ६३ ॥
चन्द्र बाँये सूर दहिने अललपच्छ उड़ावनं ।
उलटि मकरी तार गहि कै सुरति को यों लावनं ॥ ६४ ॥
महल अठयें जाय बैठे जहाँ ना कोउ दूजनं ।
बरत है इक दीप जहवाँ महल में उँजियारनं ॥ ६५ ॥
दास ईस से भेद नाहीं मौज बैठि के मारनं ।
दास पलटू होय ऐसन सोई है परमेसुरं ॥ ६६ ॥
चिन्ता नाहीं छुटत मन से बिना जोग के साधनं ।
अगम निगम बिचारि देखो यही मत सिद्धान्तनं ॥ ६७ ॥
ध्रुव प्रहलाद सनकादि कीन्हा ब्यास औ सुकदेवनं ।
दत्तात्रेय जड़भरथ कीन्हा राजा रघु सोइ धारनं ॥ ६८ ॥
सहित जननी कपिल कीन्हा जनक अष्टावक्रनं ।
स्रीमुख से हरि आपु भाखा सहित ऊधो अर्जुनं ॥ ६९ ॥
सोई नौ जोगेसर कीन्हा नानक तुलसि कबीरनं ।
दास पलटू साधि यह सब बचन सो प्रतिपालनं ॥ ७० ॥
बिना जोग न छुटै चिन्ता कोटि करै उपायनं ।
जोग करि जब सधै कारज निर्गुन सर्गुन बराबरं ॥ ७१ ॥
उलटि ताकै चाल उलटी अलख को आलेखनं ।
सन्त जन जब करत दाया लगै सो उपदेसनं ॥ ७२ ॥
पड़ा रहु सतसंग भीतर सन्त बड़े दयालनं ।
भर्म भागै मगन लागै भृङ्गी कीट बनावनं ॥ ७३ ॥

पारस के परसंग सेती लोह ह्वै गे कंचनं ।
मलया के परसंग सेती सकल बन भे चन्दनं ॥ ७४ ॥
नाम को जो मिलन चाहै और नाहिं उपायनं ।
जग हँसै तो हँसन दीजै लोक लाज बहावनं ॥ ७५ ॥
जौन रहनी संत रहते रहनी सोई अब धारनं ।
लोभ मोह हंकार तृस्ना ताहि दूर बहावनं ॥ ७६ ॥
भूख और पियास निद्रा काम क्रोध बिसारनं ।
आँख मूँदि के ध्यान लावै द्वार दसवाँ खोलनं ॥ ७७ ॥
नाम कै सुर नाद अनहद सब्द कै झनकारनं ।
गैब कँहै स्रवन सूच्छम सब्द कँहै सुनावनं ॥ ७८ ॥
मंत्र बिनु इक बजत जंत्री नाना लहर तरंगनं ।
मौज मारै बैठि के तहँ रतन जड़ित सिंघासनं ॥ ७९ ॥
वही है तिहुँ लोक ऊपर उनसे बड़ा न दूसरं ।
साष्टाँग दंडवत पलटू तिनहिं को परदच्छिनं ॥ ८० ॥
सेस कमठ अकास आनै चाँद सूर पतालनं ।
गगन की धुनि खबरि आनै सोई सन्त सुजाननं ॥ ८१ ॥
तिलक द्वादस भजन इक-रस गगन में झनकारनं ।
पवन निसि दिन चलै उलटी पच्छिम गंग बहावनं ॥ ८२ ॥
कठिन मारग बिषम घाटी बहुत सूच्छम पंथनं ।
पहिले सीस उतारि घालै पाँव को तब राखनं ॥ ८३ ॥
नाम का घर ख्याल नाहीं सहज मत कोउ जाननं ।
जीवत मरै सोई भेद पावै लोक लाज बहावनं ॥ ८४ ॥
अधर में दरियाव है इक पवन की तहकीकनं ।
अधोमुख इक कूप है दरियाव के तहँ बीचनं ॥ ८५ ॥
कूप ऊपर ऊँच है इक अधर बीच सुमेरनं ।
सुमेर ऊपर महा देवल देवल ऊपर छेदनं ॥ ८६ ॥

ताहि पैंड़े निकरि जावै सोई सन्त सुजाननं ।
खोजि के जब खोजि पावै सकल दुक्ख मिटावनं ॥ ८७ ॥
कर्म बंधन सकल छूटै जीवन मुक्ति कहावनं ।
भजत भजत भजन होइगे सोई है करतारनं ॥ ८८ ॥
भजन में है जुगल मारग बिहँग और पपीलनं ।
पपील मद्धे सिद्ध कहिये बिहँग सन्त कहावनं ॥ ८९ ॥
अनेक जन्म जब सिद्ध होवै अन्त सन्त कहावनं ।
सिद्ध से जब सन्त होवै आवागवन मिटावनं ॥ ९० ॥
सन्त के हरि निकट रहते सिद्ध से हरि दूरिनं ।
सिद्ध चिन्ता रहत निसि दिन सन्त भजन अचिन्तनं ॥ ९१ ॥
रूप रस औ गन्ध छूटै पारस को अलगावनं ।
तरत है ले नाम आकर सोई मंत्र बिचारनं ॥ ९२ ॥
बिन्द में तहँ नाद बोलै रैन दिवस सुहावनं ।
दास पलटू होय ऐसन सोई बिस्नु सरूपनं ॥ ९३ ॥
सीस धरै उतारि भूँई रुंड से तब धावनं ।
सीस पर जब पाँव राखै अधर चाल चलावनं ॥ ९४ ॥
अधोमुख इक कूप है तेहि कूप भीतर जावनं ।
सुरति से ब्रह्मंड खोलै सब्द को ठहरावनं ॥ ९५ ॥
तहँ बुन्द चूवै गगन से इक साँपिनी मुख मध्यनं ।
मारि साँपिनि चलै आगे अमी रस तेहि पीवनं ॥ ९६ ॥
हद अनहद को छोड़ि देवै वेहद कदम चलावनं ।
वेहद के मैदान भीतर सब्द की झनकारनं ॥ ९७ ॥
सेत बरन सरूप वा को तहाँ ध्यान सुहावनं ।
बुन्द जाय समुद्र मिलि गे बहुरि नहिं फिरि आवनं ॥ ९८ ॥
सहज लगी समाधि जेकर भजन सदा अखंडनं ।
धन्य जननी पिता ओकर जहाँ है हरि भक्तनं ॥ ९९ ॥

धन नगर धन देस कहिये जहाँ भक्त निवासनं ।
बैकुंठ है लघु तासु पटतर[1] सहित मथुरा अवधेसनं ॥ १०० ॥
प्रीति से जो छंद बाँचै सहित कथा अस्थूलनं ।
दास पलटू मोर पद को अन्त समय पधारनं ॥ १०१ ॥

॥ साध सन्त की रहनी ॥

१०४

सुनिये साध सन्त की रहनी, भाई और बात ना कहनी ॥ १ ॥
मन से सँकलप बिकलप छोड़ै, जग से तोड़ै हरि से जोड़ै ॥ २ ॥
कबहीं ओढ़ै साल दुसाला, कबहीं ओढ़ि रहै मृगछाला ॥ ३ ॥
कबहीं नहीं पाँव में जोड़ा, कबहीं सौ सौ कोतल घोड़ा ॥ ४ ॥
कबहीं अतर फुलेल लगावै, कबहीं सिर पर खाक चढ़ावै ॥ ५ ॥
कबहीं ज्ञान कहै समुझावै, कबहीं चुप करि तारी[2] लावै ॥ ६ ॥
कबहीं महा-नियामत[3] खावै, कबहीं दस फाका बित जावै ॥ ७ ॥
कबहीं हिंदू होइ कै बैठै, कबहीं मुसलमान में पैठै ॥ ८ ॥
कबहीं सेज सुपेदी होई, कबहीं जमीं मँहै रहै सोई ॥ ९ ॥
कबहीं बाँका भेष बनावै, कबहीं भेष को दूरि बहावै ॥१०॥
कबहीं सिर पर जटा बिसाला, कबहीं कंठी टीका माला ॥११॥
कबहीं होइ कै बैठै जोगी, कबहीं सब रस का है भोगी ॥१२॥
कबहिं कीरतन नाच करावै, कबहिं आप ही बन बन धावै ॥१३॥
कबहीं हाजिर[4] महल अटारी, कबहीं टाटी नाहिं दुवारी ॥१४॥
कबहीं लड़िकन के सँग खेलै, कबहीं बेद पुरान को बोलै ॥१५॥
कबहीं रोवै सिर दे मारै, कबहीं हँसि हँसि निसि दिन टारै ॥१६॥
कबहीं कनक थार में पावै, कबहीं हाथै पर लै खावै ॥१७॥
कबहीं परै पाँव में छाला, कबहीं चलता है सुखपाला[5] ॥१८॥
कबहीं फटही-[6] लँगोटी, कबहीं है मोतिन की चोटी ॥१९॥

---

(१) मुकाबले में। (२) ध्यान। (३) छप्पन प्रकार के भोजन। (४) दूसरी लिपि में "दलानों" है। (५) पालकी। (६) यहाँ ठेठ हिन्दी शब्द गुदा के अर्थ का है।

कबहीं माया की है कोठी, कबहीं लोन बिना की रोटी ॥२०॥
कबहीं राजसिंहासन जागै,[1] कबहीं भिच्छा घर घर माँगै ॥२१॥

छंद

पलटू ये लच्छन सन्त के, कछु नाहिं संग्रह त्याग है।
प्रारब्ध पर वै डारि देते, लगै न उनको दाग है ॥ २२ ॥
आपनी सब उक्ति छोड़ौ, जुगति ना कछु कीजिये।
करनवाला और है, संतोष क्यों ना लीजिये ॥ २३ ॥

दोहा

पलटू गुनना छोड़ि दै, चहै जो आतम सुक्ख।
संसय सोइ संसार है, जरा मरन को दुक्ख ॥ २४ ॥

कबहीं हरि दासन को दासा, कबहीं पूरन ब्रह्म निवासा ॥२५॥
कबहीं सब से गोड़ धरावै, कबहीं आप पायँ परि आवै ॥२६॥
कबहीं कहै गरीबी बानी, कबहीं ह्वै बैठै अभिमानी ॥२७॥
कबहीं हरि लीला को गावै, कबहीं आपु में राम बतावै ॥२८॥
कबहीं जग को साच बतावै, कबहीं मिथ्या करि ठहरावै ॥२९॥
कबहीं सगुन बात बतावै, कबहीं निर्गुन रूप दिखावै ॥३०॥
कबहीं द्वैत मता बतरावै, कबहीं अद्वैत ह्वै जावै ॥३१॥
कबहीं कारज ह्वै दिखरावै, कबहीं कारन में मिलि जावै ॥३२॥
कबहीं रुष्ट पुष्ट ह्वै जावै, कबहीं हाड़ै हाड़ दिखावै ॥३३॥
कबहीं घरबासी ह्वै जावै, कबहीं महा त्याग दिखरावै ॥३४॥
कबहीं रोज हजारों खरचै, कबहीं आप खाय बिन तरसै ॥३५॥
कबहीं संग हजारों भेषा, कबहीं फिरत अकेले देखा ॥३६॥
कबहीं निन्दा नीकी लागै, कबहीं निन्दा सुनि कै भागै ॥३७॥
कबहीं अस्तुति सुनि कै रोवै, कबहीं अस्तुति सुनि खुस होवै ॥३८॥
कबहीं नारिन से हँसि बोलै, कबहीं नाहिं को

(१) दूसरी लिपि में

झिरिहिरि बहै बयारि, अमी रस ढरके हो ।
बरमी[1] नौरँगिया कै डारि, चँदन गछ मरकै[2] हो ॥ ६ ॥
तेहि चढ़ि बोलै हंस, सबद सुनि बाउर हो ।
मंगल पलटूदास, जगति कै नाउर[3] हो ॥ ७ ॥

१०७

मातु पिता सुत बंधु, कोऊ नहिं अपना हो ।
छिन में होत परार[4], सकल जग सपना हो ॥ १ ॥
माया रूपी नारि, रहत सँग लागी हो ।
हंसा कीन्ह पयान, प्रेत कहि भागी हो ॥ २ ॥
धावन धाये लोग, बेगि रथ साजा हो ।
करहिँ अमंगलचार, कहाँ गये राजा हो ॥ ३ ॥
लाइ दिह्यो मुख आगि, काठ बहु भारा हो ।
पुत्र लिहे कर बाँस, सीस तकि मारा हो ॥ ४ ॥
हैं वैरिन के मूल, तिन्हैं हित जाना हो ।
पलटुदास गुरु-ज्ञान बूझि अलगाना हो ॥ ५ ॥

॥ सोहर ॥

१०८

अरि अरि सुरति सोहागिनि, पैयाँ तोरी लागौं हो ।
ललना रूठल कंथ मनावौ, यही बर माँगौं हो ॥ १ ॥
तुम्हरे मनाये सुरतदेइ, जो पिय आवहिं हो ।
ललना उजड़ल नगर बसावहु, मोहिं जुड़ावहु हो ॥ २ ॥
गज मोती चौक पुरावहु, कलस धरावहु हो ।
ललना ऊँचे चढ़ि बैठावहु, पिया जो पावहु हो ॥ ३ ॥
तू जनि मोहिं अगुतावहु[5], नरक जनि नावहु हो ।
ललना कंत से तुमहिं मिलावहु, तो सुरति कहावहु हो ॥ ४ ॥

---

(१) [illegible]। (२) [illegible] या लचक कर टूट टूटे हो जाना। (३) नाऊ जिस के [illegible] [illegible] पर मंगला-चरन गाने की चाल कहीं कहीं है। (४) पराया, बेगाना। (५) [illegible]।

बरहें बरस पिय आये, तो मोहिं गुहराइनि हो।
ललना गगन किवारी खोलिनि, समहिं मनाइनि हो ॥ ५ ॥
पलटूदास भ्रम भागै, चित अनुरागै हो।
ललना मन-बांछित फल होइ, बार नहिं लागै हो ॥ ६ ॥

१०९

मोर पिया बसै पुर पाटन, हम धन हिंयवैं हो ललना।
अपने पिय की सुद्धि जो पौतिउँ, हम धन कहँवौं हो ललना ॥१॥
अँग अँग भभूति लगौतिउँ, बनै फल खातिउँ हो ललना।
धरतिउँ जोगिनिया कै भेस, पास पिय जातिउँ हो ललना ॥२॥
खोज में निकसिउँ गैलिउँ बिदेसवाँ, पिय भल पायौं हो ललना।
चरन कँवल सिर नाय, मनहिं समुझायौं हो ललना ॥३॥
गर्भ रहा बिस्वास, पिया मोर जानै हो ललना।
अचरज खाय सब लोग, कोई नहिं मानै हो ललना ॥४॥
पलटूदास के सोहर, जो कोई गावै हो ललना।
दसवें मास इक पुत्र लहै, सुख पावै हो ललना ॥५॥

॥ वसंत ॥

११०

ए मन भौंरा कित लुभाय, ऋतु बसंत तेरो चल्यो जाय ॥टेक॥
काया बन तेरो रह्यो है फूल, अमृत रस हरि नाम मूल।
चहुँ दिसि आवै बास सुबास, आनँद छः ऋतु बरहो मास ॥१॥
भाँति भाँति आवै सुगंध, पाइर सूँघन जासु अंध[1]।
अछै बृच्छ सोभित बिसाल, फल लागे तहँ लाल लाल ॥२॥
भँवरा लालच दुरि बलाय, हरि तजि बाहर मरै धाय।
घर बैठे तू करु बिलास, मगन रहो जनि होहु उदास ॥३॥
एक तो भँवरा भयेउ बूढ़, रूप पियो अब ढूँढ़ ढूँढ़।
पलटूदास इक अधर अधार, पुहुप बीच करु गुंजमार[2] ॥४॥

(१) हे अंधे भँवरा (अर्थात् मन) तू अपने अंतर की सुगंधि को छोड़ कर क्यों बाहर के पाइर सरीखे दुर्गन्ध फूलों के सूँघने को जाता है। (२) गुंजार।

॥ होली ॥

१११

होरी खेलौं मैं पिय के संग, मेरा कोइ क्या करै ॥ टेक ॥
तन भाठी मन बैठि चुवावै, पिय का पियाला नैन भरै ॥ १ ॥
सासु बुरी घर ननद तुफानी, देखि सुहाग हमार जरै ॥ २ ॥
पलटूदास पिया घर आये, अस्तुति निन्दा भाड़ परै ॥ ३ ॥

॥ हिंडोला ॥

११२

अरे सखि निरखि लेहु, आकास हिंडोलवा हो ॥ टेक ॥
सुभग सुहावन बादर हो, हरि हरि परै बूँदि ।
भीतर कै दर[1] खोलहु हो, बाहर कै लेहु मूँदि ॥ १ ॥
चमकि चमकि उठै बिजुली हो, बादर दौरा जाय ।
कहूँ लाल कहुँ पीयर हो, सखि सबद उठै घहराय ॥ १ ॥
ज्यों ज्यों पवन झकोरहि हो, त्यों त्यों घटा गँभीर ।
पवन परै[2] तब बरसै हो, सखि गगन से निरमल नीर ॥ ३ ॥
ससि औ भान तारागन हो, निरमल भयो अकास ।
पलटुदास हम झूलहि हो, सखि अपने पिय के पास ॥ ४ ॥

॥ बारहमासा ॥

११३

सखी मोरे पिय की खबरि न आई हो ॥ टेक ॥
मास असाढ़ गगन घन गरजै, सब सखि छानि छवाई ।
हौं बौरी पिया बिनु डोलौं, सून मँदिल बिनु साईं ॥ १ ॥
सावन मेघ गरज मोरि सजनी, कोयल कुहुक सुनाई ।
हौं बौरी पीतम बिनु व्याकुल, तलफत रैनि बिहाई ॥ २ ॥
भादों गरुव गँभीर सखी री, काली घटा नभ छाई ।
चमकत बिजुलि घोर घन गरजत, सूनि सेज पिय नाहीं ॥ ३ ॥

---

(१) किवाड़ । (२) ठहर जाय ।

क्वार मास सब जुड़ि मिलि सखियाँ, झूठे माँगन आईं ।
हमरे बलमु परदेस बिलमि रहे, उन बिनु कछु न सुहाई ॥४॥
कातिक घर घर सब सखियाँ मिलि, रचि रचि भवन बनाई ।
मैं पापिनि प्रीतम बिनु सजनी, रोइ रोइ दिवस गँवाई ॥५॥
अगहन अग्र[1] सनेह सबै सखि, पिय सँग गवने जाई ।
देखि देखि मोहिं बिरह बढ़तु है, पिय बिनु जिय अकुलाई ॥६॥
पूस मास परदेस पियरवा, आवन की सुधि नाहीं ।
काह करौं कित जाउँ सखी री, किन दूतिन बिलमाई ॥७॥
माघ तुसार[2] परन लागो सजनी, पतियौ नाहिँ पठाई ।
ऐसे निपट कठोर कृपामय, निपटै सुधि बिसराई ॥८॥
फागुन मास आस जब टूटी, जोगिनि होइ कै धाई ।
गैब नगर के गलिन गलिन में, पिय पिय सोर मचाई ॥९॥
चैतै चित चिंता अति बाढ़ी, तन मन भसम[3] चढ़ाई ।
निसि बासर मग जोहत सजनी, नैन नीर झरि लाई ॥१०॥
बैसाखै बंसी धुनि सुनि सजनी, मन अति तलफ मचाई ।
बिरह भुवंग डस्यो मोरे हियरे, तन मन की सुधि न रहाई ॥११॥
जेठै जब यह गति भइ सजनी, निरखि परी इक झाईं[4] ।
सुन्न मँदिल इक मूरति दरसी, देखत जियरा जुड़ाई ॥१२॥

॥ मिश्रित ॥

११४

धुबिया रहै पियासा जल बिच, लागि जाय मुँह लासा ॥टेक॥
जल में रहै पियै नहिं मूरख, सुन्दर जल है खासा ।
अपने घर सन्देस पठावै, करै धोबिनि कै आसा ॥ १ ॥
एक रती को सोर लगावै[5], छूटि जाय भर मासा ।
आपै बटै करम की रसरी, अपने गल कर फाँसा ॥ २ ॥

(१) उत्तम । (२) बरफ । (३) भभूत । (४) झलक । (५) चिल्लावै ।

आपुइ रोवै आपुइ धोवै, आपुइ रहै उदासा।
दाग पुराना छूटै नाहीं, लील बिषै की बासा ॥ ३ ॥
साबुन ज्ञान लेइ नहिं मूरख, है सन्तन के पासा।
पलटूदास दाग कस छूटै, आछत अन्न उपासा ॥ ४ ॥

११५

हरि को मैं बेगि रिझाओंगी, भजन महैं सुख पाओंगी ॥टेक॥
ज्ञान ध्यान के घुँघुरू बाँधौं, लटकि लटकि गुन गाओंगी ॥१॥
अँगिया सुमति प्रेम की सारी, नवनि[1] नाथ[2] झमकाओंगी ॥२॥
घँघरा पहिरि बिबेक घेर को, अंजन सील बनाओंगी ॥३॥
बाजूबंद अनंद पहिरि कै, सबद से माँग भराओंगी ॥४॥
सुरति सुहागिनि पैयाँ पर लोटै, सूतत कंथ जगाओंगी ॥५॥
पलटुदास यह खेल खेलि कै, बहुरि नहीं फिर आओंगी ॥६॥

११६

है कोइ सखिया सयानी, चलै पनिघटवा पानी ॥ टेक ॥
सतगुरु घाट गहिर बड़ सागर, मारग है मोरी जानी।
लेजुरी सुरति सबद कै घैलन, भरहु तजहु कुल कानी ॥ १ ॥
निहुरि के भरै घयल नहिं फूटै, सो धन प्रेम दिवानी।
चाँद सुरुज दोउ अंचल सोहैं, वेसर लट अरुझानी ॥ २ ॥
चाल चलै जस मैगर[3] हाथी, आठ पहर मस्तानी।
पलटूदास झमकि भरि आनी, लोक लाज ना मानी ॥ ३ ॥

११७

साधो देखि परो क्या गाई, तत्त में तत्त समाई ॥ टेक ॥
कसर रहै तो कुन्दन नाहीं, खरा भये क्या खोलै।
बकुला सेती हंस भयो है, पाछिल बोल न बोलै ॥ १ ॥
त्रिप परपंच मिटा भा इस्थिर, मनि गन अजगर सोई।
जौं लगि छाछ रहै घिव माहीं, तौं लगि चुप[4] ना होई ॥ २ ॥

---

(१) झुकना, दीनता। (२) नथ। (३) मस्त। (४) जब तक सब छाछ जल जाती तब तक घी कड़ाही में बोलता रहता है।

जौं लगि तोई[1] डोलै बोलै, तौं लगि माया माहीँ ।
मगन भये पर अब क्या बोलै, हरि हैं अब हम नाहीँ ॥ ३ ॥
भूख पियास एकौ नहिँ लागै, छूटि गई दुचिताई ।
पलटूदास जो ऐसा जोगी, बोलै कौन बड़ाई ॥ ४ ॥

११८

समुझि देखु मन मानी, पलटू निरगुन बनियाँ ॥ टेक ॥
चारि बेद कै टाट बिछावत, तेहि चढ़ि करत दुकनियाँ ॥ १ ॥
सत्य सेर मन प्रेम तराजू, नाम कै मारत टेनियाँ[2] ॥ २ ॥
सुरति सबद कै बैल लदाइनि, ज्ञान कै गोंनि[3] लदनियाँ ॥ ३ ॥
सहर जलालपुर मूँड़ मुड़ाइनि, अवध तोरिनि करधनियाँ ॥ ४ ॥
पलटूदास सतगुरु बलिहारी, पाइनि भक्ति अमनियाँ ॥ ५ ॥

११९

चाहौ मुक्ति जो हरि को सुमिरौ, हम तो हरि बिसराया हो ॥टेक॥
सुमिरत नाम बहुत दिन बीते, नाहक जनम गँवाया हो ।
मुक्ति बिचारी करै खवासी, पिय को हम अपनाया हो ॥ १ ॥
साहिब मेरा मुझ को सुमिरै, मैं ना सीस नवावौं हो ।
बैठा रहौं सौक[1] में अपने, केकर दास कहावौं हो ॥ २ ॥
बूझी बात खुला अब परदा, क्योंकर साच छिपावौं हो ।
जैसन देखौं तैसन भाखौं, मैं ना झूठ कहावौं हो ॥ ३ ॥
संका नाहिँ करौं काहू की, समसे बड़ कोउ नाहीँ हो ।
पलटूदास कवन है दूजा, हमहीँ हैं सब माहीँ हो ॥ ४ ॥

१२०

खालिक खलक खलक में खालिक, ऐसा अजब जहूरा है ।
हाजी हज्ज हज्ज में हाजी, हाजिर हाल हजूरा है ॥ १ ॥
फल में फूल फूल में फल है, रोसन नबी का नूरा है ।
पलटूदास नजर नजराना, पाया मुरसिद पूरा है ॥ २ ॥

(१) पानी । (२) तराजू को अँगुली से चोरी से दबाकर माल कम तौलना । (३)

१२१

बैठी तमोलिन बिटिया[1] हो, कतरै बँगला पान ॥ टेक ॥
कहे नारी तोर नैहरवा हो, कहवाँ ससुरार ॥ १ ॥
काहे कै तोर कतरनी हो, का करत अहार ॥ २ ॥
सरगुन मोर नैहरवा हो, निरगुन ससुरार ॥ ३ ॥
ज्ञान कै हमरी कतरनी हो, सब्द करीला अहार ॥ ४ ॥
पाँच पुत्र हम जाया हो, सो हैं बार कुँवार ॥ ५ ॥
ससुरे गये ससुरवा हो, कहै कुलवंती नार ॥ ६ ॥
पलटुदास निज पूछैं हो, कहु कुसल हमार ॥ ७ ॥
गुरु के चरन रज अंजन हो, लेहु नैन मँझार ॥ ८ ॥
आवागवन नसावै हो, गुरु होवैं दयार ॥ ९ ॥

१२२

मत कोइ करो बैराग हो, बैराग कठिन है ॥ टेक ॥
जग की आस करै नहिं कबहूँ, पानी पिये नहिं माँगी हो ॥१॥
भूख पियास हरै अरु निद्रा, रहै प्रेम लौ लागी हो ॥ २ ॥
जो कोइ धड़ पर सीस न राखै, जियत रहै तन त्यागी हो ॥३॥
पलटुदास बैराग कठिन है, दाग दाग पर दागी हो ॥ ४ ॥

१२३

गुरू से भेद पुछन को आया ॥ टेक ॥
कौन गुरू से मूँड़ मुँड़ाया, कहवाँ आसन लाया ।
कौन गुरू का सुमिरन कीन्हा, बिरथा जनम गँवाया ॥ १ ॥
अलख पुरुष से मूँड़ मुँड़ाया, गगन में आसन लाया ।
ओं नाम सब ही घट व्यापै, ता से रगड़ लगाया ॥ २ ॥
दत्तात्रेय आदि के जोगी, चौबिस गुरू बनाया ।
संत जोग एको नहिं जाना[2], ता तें भटका खाया ॥ ३ ॥
इँगला पिंगला सुखमन नाड़ी, अनहद डंक[3] जगाया ।
त्रिकुटी सुन्न मद्ध के ऊपर, सोहग सब्द समाया ॥ ४ ॥

---

(१) रास्ते में । (२) संत सतगुरु नहीं मिले । (३) डंका ।

जलावंत[1] इक सिंध अगम है, सुखमन सूरत लाया।
उलट पलट के यह मन गरजै, गगन मँडल घर पाया ॥ ५ ॥
चौदह तबक तिहूँ के ऊपर, तहाँ निसान गड़ाया।
पलटू कैसी अचरज तेरी, अचल साहिबी पाया ॥ ६ ॥

१२४

निँदरिया मोरी बैरिन भई ॥ टेक ॥
की कोइ जागै जोगी भोगी, की राजा की चोर।
की कोइ जागै सेत बिबेकी, लगन राम की ओर ॥ १ ॥
जागे से परलोक बनतु है, सोये बड़ दुख होय।
सतगुरु लीन्हे जो जन जागै, करतम करता होय ॥ २ ॥
स्वारथ लीन्हे सब जग जागै, परमारथ जगै न कोय।
परमारथ को जो जन जागै, भजन बन्दगी होय ॥ ३ ॥
काम क्रोध लीन्हे जो जागै, गये जिन्दगी खोय।
ज्ञान खरग लिहे पलटू जागै, होनी होय सो होय ॥ ४ ॥

१२५

काहे को लगायो सनेहिया हो,
अब तुरल[2] न जाय ॥ टेक ॥
जब हम रहिनि लरिकवा हो,
पिया आवहि जाय।
जब हम भइनि सयानी हो,
पिया गये बिदेस ॥ १ ॥
पिय कों पठयो सँदेसवा हो,
आये पिय मोर।
हम धन पैयाँ उठि लागब हो,
जिय भयल भरोस ॥ २ ॥

(१) जलमई। (२) तोड़ी।

सोने कि थरियवा जेवना हो,
　　हम दिहल परोस।
हम धन बेनियाँ डोलाउब हो,
　　जेंवै पिय मोर ॥ ३ ॥
रतन जड़ित इक झारी हो,
　　जल भरा अकास।
मोरे तोरे बिच परमेसुर हो,
　　कहै पलटूदास ॥ ४ ॥

१२६

जो कोइ राखै कदम फकीरी,
　　कफनी खुसी की डारै हो ॥ टेक ॥
सादी गमी एक करि जानै,
　　झूठ कभी ना भाखै हो।
दुसमन दोस्त एक है दोऊ,
　　इन्हैं एक घर राखै हो ॥ १ ॥
दावा दुई दूरि होइ जावै,
　　सो दुरवेस कहावै हो।
हेलुवा घूसा कोऊ चढ़ावै,
　　हँसि हँसि दोऊ खावै हो ॥ २ ॥
सीस दिहा तब अब क्या रोना,
　　मनी मान को खोवै हो।
दम दम याद करै साहिब को,
　　नेकी दस्त[1] में बोवै हो ॥ ३ ॥
दहसति[2] नाहिं करै किसहू की,
　　जिकिर अपानी खोलै हो।

(१) हाथ। (२) भय।

पलटू रोसन इहै कमाली,
तनहा[1] होइ जब डोलै हो ॥ ४ ॥

१२७

भेद भरी तन कै सुधि नाहीं,
ऐसी हाल हमारी हो ॥ टेक ॥
पुरुष अलख लखि मन मतवाला,
झुकि झुकि उठत सम्हारी हो ॥ १ ॥
घायल भये नाद के लागे,
मरमा[2] है सबद कटारी हो ॥ २ ॥
टकटक ताकि रही ठगमूरी,
आपा आप बिसारी हो ॥ ३ ॥
सिथिल भई मुख बचन न आवै,
लागि गगन बिच तारी हो ॥ ४ ॥
सखि पलटू अलमस्त दिवानी,
गोबिँदनन्द दुलारी हो ॥ ५ ॥

१२८

अरे बनिजारा रे भइया,
तू मत करु अस ब्योपार ॥ टेक ॥
इक बनिजारा अलप जुवनियाँ[3],
दुसरे लगतु है जाड़ ।
राति बिराति चलै तोरी बरदी,
लूटि लेइहि कोउ ठाढ़ ॥ १ ॥
एक तोरि रोवै माइ बहिनियाँ,
दुसरे गाँव के लोग ।
तिसरे रोवै तोरी बारी बियहिया,
घर घर परिगा सोग ॥ २ ॥

(१) अकेला। (२) मर्म वाली। (३) कम उमर, नौजवान।

आगि लगो वहि घाटे बाटे,
जहवाँ किहेउ पयान।
छौंकत बरदी लादेहु नायक,
माँग सेँदुर भहरान ॥ ३ ॥
घर बैठे सुख बिलसहु नायक,
मत तू जाहु बिदेस।
केतिक नायक लादि गये हैं,
काहू न कहा सनेस ॥ ४ ॥
प्रेम को घाट कठिन है नायक,
जो कोइ उहवाँ जाई।
पलटूदास करौं मैं बिनती,
बहुरि न भवजल आई ॥ ५ ॥

१२६

फिरै इक जोगी नगर भुलाना, चढ़िगा महलै महल दिवाना ॥टेक॥
ना वह खावै ना वह पीवै, ना वह भिच्छा जाचै[१]।
ना वह बोलै ना वह डोलै, बिना नचाये नाचै ॥ १
सुखमन के घर भाटी चूवै, पियै बंक के नाला।
जब देखो तब प्रेम छका है, जपता अजपा माला ॥ २ ॥
गगन गुफा में सिंगी टेरै, जाग्रत के घर जागै।
तिरवेनी में आसन मारै, पारब्रह्म अनुरागै ॥ ३ ॥
सुन्न महँ मौनी होइ बैठे, अनहद तूर बजावै।
तुरिया चढ़ि गदगद होइ बोलै, लंबिका सुर लै गावै ॥ ४ ।
सब्दै सब्द मिलावै जोगी, खुलि गा गगन रखाना[२]।
पलटूदास कौन अलगावै, बुंद में समुँद समाना ॥ ५ ॥

१३०

देखु रे गुरु गम मस्ताना। जानैगा कोइ साधु सयाना ॥ टेक ॥

(१) मांग। (२) रखना=मोखा।

जियतै मरै सोई पहिचानै, गैब नगर सहजै चढ़ि जाना ॥१॥
इँगला पिँगला चँवर ढुरावै, सुखमन निसु दिन हनत निसाना ॥२॥
तुरिया चढ़ि जब गरजन लागे, छबि देखत सुर भूप लजाना ॥३॥
गुरु गोबिँद मासूक मिले हैं, आसिक ह्वै पलटू बौराना ॥४॥

१३१

देखो इक बनियाँ बौराना। ज्ञान की करै दुकाना ॥टेक॥
बेचै अमृत बिष सम लागै, गाहक कोऊ न आवै।
आपुहि से बगदावै[1] ॥ १ ॥
आरी माँगै खाँड़ दिखावै, सब से पूछै लेवो।
देइ उधार बिना वादे[2] पर, कबहुँ न कहै कि देवो ॥ २ ॥
जो लेवै सो खुस होइ जावै, सबसे मीठी बोलै।
छिमा तराजू पुरा[3] बाट लै, बिना दाम वह तोलै ॥ ३ ॥
नाम रतन की ढेरी लागी, जोग जुगति से बोलै।
कुंजी सुरत सबद का तारा, आठ पहर ना डोलै ॥ ४ ॥
पलटूदास सत्त का सौदा,

१३२

हम को क्या जरूर वे, साहिब हाल हजूर वे ॥टेक॥
गैब तख्त बादसाह भया दिल, बजै अनाहद तूर वे ॥ १ ॥
ना जानौं दहुँ कौन पिलावै, अरस[4] पियाला नूर वे ॥ २ ॥
छिन छिन पल पल कल न परतु है, रोम रोम भरिपूर वे ॥ ३ ॥
जगमग जोति छत्र सिर ऊपर, ऐसा अजब जहूर वे ॥ ४ ॥
पलटूदास आस अब किस की, दुरमति भागी दूर वे ॥ ५ ॥

१३३

माया तू जगत पियारी वे, हमरे काम की नाहीं।
द्वारे से दूर हो लंडी[5] रे, पइठु न घर के माहीं ॥ १ ॥
माया आपु खड़ी भइ आगे, नैनन काजर लाये।
नाचै गावै भाव बतावै, मोतिन माँग भराये ॥ २ ॥

(१) भूल मैं डालै। (२) शर्त। (३) पूरा। (४) ब्रह्मांड। (५) लौंडी।

रोवै माया खाय पछारा, तनिक न गाफिल पाऊँ।
जब देखौ तब ज्ञान ध्यान में, कैसे मारि गिराऊँ॥ ३॥
ऋद्धि सिद्धि दोउ कनक समाजी, बिस्नु डिगन[1] को भेजा।
तीन लोक में अमल तुम्हारा, यह घर लगै न तेजा[2]॥ ४॥
तू क्या माया मोहिं नचावे, मैं हौं बड़ा नचनियाँ।
इहवाँ बानिक[3] लगै न तेरी, मैं हौं पलटू बनियाँ॥ ५॥

१३४

संतो बिस्नु उठे रिसियाय, माया किन्ह जीतिया॥टेक॥
माया को लिया बुलाय, गोद लै पूछन लागे।
तीन लोक की बात, प्रगट करु मोरे आगे॥ १॥
माया रोवन लागि, खोल कर मूँड़ दिखावै।
दै जूतिन की मार, मोहिं बनिया दुरियावै॥ २॥
दिहा इन्द्र को त्रास[4], अपसरा तुरत पठावो।
नाना रूप बनाय, जाइ कै तुरत डिगावो॥ ३॥
उतरी अपसरा आय, अवधपुर जहँवाँ बनियाँ।
सोरहो किये सिँगार, चंद्रमुख मधुर बचनियाँ॥ ४॥
छुद्र घंटिका[5] पायल[5], बाजै रतन जड़ाऊँ।
ऋतु वसंत की आनी, मोतिन से माँग भराऊँ॥ ५॥
नाचै गावै राग, भाव धै बाँह बतावै।
बनियाँ लाय समाधि, डिगै ना लाख डिगावै॥ ६॥
क्या तुम भये फकीर, नारि तुम सुंदर बिलसौ।
सोना रूपा लेहु, माया को जनि तुम तरसौ॥ ७॥
इन्द्र-लोक तुम लेहु, होहु वैकुंठ के राजा।
ताको हमरी ओर, तुम्हैं हम बहुत निवाजा॥ ८॥
ऋद्धि सिद्धि तुम लेहु, मुक्ति तुम लेहु अघाई।
तीन लोक में फिरै तुही, ना आन दुहाई॥ ९॥

(१) डिगाने या गिराने को। (२) बल, जोर। (३) दाँव, छल बल। (४) धमकी। (५) गहनों के नाम।

हम सब दाबहिँ गोड़, फूलन की सेज बिछाई ।
मानो बचन हमार, तुम्हैँ है राम दुहाई ॥ १० ॥
बनियाँ हँसा ठठाइ, पलक को नाहिँ उघारी ।
तुहरे बहुत भतार, रहिउ ना तुही कुआरी ॥ ११ ॥
आगि लगै बैकुंठ, लौंड़ी है मुक्ति हमारी ।
इहाँ से होहु तू दूरि, माया तू भई अनारी ॥ १२ ॥
हम जोगी बेकाम, खसम तुम खोजो मोटा ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस, तुम्हारे लायक ढोटा ॥ १३ ॥
हमरे सबद बिबेक, लगहि चूतर में सोंटा ।
आबरूह[1] लै भागु, पकरि के कढ़िहैँ झोंटा ॥ १४ ॥
चली अपसरा हारि, जाय बैकुंठ में भागी ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस की, रहै कचहरी लागी ॥ १५ ॥
अपसरा कहै पुकार, सुनो मत बचन हमारा ।
बनियाँ डिगै को नाहिँ, उहाँ ना अमल तुम्हारा ॥ १६ ॥
अपना चाहो भला, जाइकै लावहु सेवा ।
उलटि देइ बैकुंठ, बचै ना सुर मुनि देवा ॥ १७ ॥
पलटूदास अपार, पार ना पावै कोई ।
करै अपसरा सोर, देवतौ उत्रिन[2] होई ॥ १८ ॥

१३५

माया ठगिनी जग बौराई ॥ टेक ॥
देवतन के घर भई अप्सरा, जोगी के घर चेली ।
सुर नर मुनि सबको खाइसि है, है अलमस्त अकेली ॥ १ ॥
कृस्न कहँै गोपी ह्वै खाइसि, राम कहँै ह्वै सीता ।
महादेव काँ पारबती ह्वै, तोहिँ से कोऊ न जीता ॥ २ ॥
बिस्नु कहँै लछमी ह्वै खाइसि, ब्रह्मा सृष्टि पसारी ।
सिंगी ऋषि को बन में खाइसि, तोहरिनि फिरै दुहाई ॥ ३ ॥

(१) हुरमत । (२) पार, उद्धार ।

दौलत है तिरलोकै खाइसि, गुरू कहै है नारी।
पलटुदास के द्वार खड़ी रहै, लौंडी भई हमारी॥ ४

१३६

माया भूत भुताना साधो, आलम[1] सब अभुवाता है॥ टेक
बूढ़ा बारा सब अभुवाता, काहू के सुधि नाहीं है।
घर घर फिरी दुहाई उसकी, सब के घट में वाही है॥ १
राजा परजा सब के लागा, सब कोऊ बौराना है।
इस के मारे सब जग मरिगा, बुढ़वा भूत सयाना है॥ २
जोरू बेटा मुलुक खजाना, उस ही की सब छाया है।
दुइ दल होइ के हाकिम लड़ता, बकता माया माया है॥ ३
मार के आगे भूत भी नाचै, हादी[2] ने जब दागा है।
ऐसे भूत को कौन छुड़ावै, हादी के भी लागा है॥ ४
पलटुदास यह भूत पुराना, तीनि लोक में जागा है।
हमरे है सतगुरु के सोंटा, लै के दौरे भागा॥ ५

१३७

हम तो बेपरवाही मियाँ वे, हम को अब का चाही॥ १
दिल दिल्ली मन तख्त आगरा, चलै सबर दे[3] माहीं॥ २
ज्ञान ध्यान की फौज हमारी, दफ्तर नाम इलाही॥ ३
दुनिया दीन दोऊ है तालिब[4], ऐसी है बादसाही॥ ४
पलटूदास दूरि भइ दूई, सादी गमी कोइ नाहीं॥ ५

१३८

मुस्किल है प्यारे कठिन फकीरी रिन्दा काम॥ १
फाका फकर सबर दिल आवै, धुनि लागी हर जाम[5]॥ २
रूखा सूखा गम का टुकड़ा, सुबह मिलै या साम॥ ३
हक्क हलाल आप से आवै, लेना और हराम॥ ४
पलटूदास सोई ठहरैगा, मुद्दा हुआ तमाम॥ ५

---

(१) संसार। (२) गुनी, स्याना। (३) के। (४) याचक, मँगना। (५) घड़ी।

१३९

पाप के मोटरी बाम्हन भाई, इन सबही जग को बगदाई[1] ॥१॥
साइत सोधि के गाँव बेढ़ावैं[2], खेत चढ़ाय के मूड़ कटावैं ॥२॥
रास बर्ग गन मूर को गाढ़ि[3], घर के बिटिया चौके राँढ़ि ॥३॥
और सभन को गरह बतावै, अपने गरह को नाहिँ छुड़ावै ॥४॥
मुक्ति के हेतु इन्हैं जग मानै, अपनी मुक्ति के मरम न जानै ॥५॥
औरन को कहते कल्यान, दुख माँ आपु रहैं हैरान ॥६॥
दूध पूत औरन को देते, आप जो घर घर भिच्छा लेते ॥७॥
पलटूदास की बात को बूझै, अन्धा होय तेहू को सूझै ॥८॥

१४०

भलि मति हरल तुम्हार पाँड़े बम्हना ॥ टेक ॥
सब जातिन में उत्तम तुमहीं, करतब करौ क़साई ।
जीव मारि कै काया पोखौ, तनिकौ दरद न आई ॥ १ ॥
राम नाम सुनि जूड़ी आवै, पूजौ दुर्गा चंडी ।
लम्बा टीका काँध जनेऊ, बकुला जाति पखंडी ॥ २ ॥
बकरी भेड़ा मछरी खायौ, काहे गाय बराई ।
धर माँस सब एकै पाँड़े, थू[4] तोरी बम्हनाई ॥ ३ ॥
सब घट साहिब एकै जानौ, यहि माँ भल है तोरा ।
भगवतगीता बूझि बिचारौ, पलटू करत निहोरा ॥ ४ ॥

१४१

कुलुफ कुफ़र को खोलौ मुलने, मुरदा होय के डोलौ ॥ टेक ॥
जो तुम चाहौ भिस्त[5] आपनी, खुदी खूब को खोवौ ।
हवा हिरिस को बसि में राखौ, रूह पाक को धोवौ ॥ १ ॥
तसबी एक रहै बेदाना, दिल अंदर में फेरौ ।
पाक मुहम्मद नजर परैगा, दिल गुम्मज में हेरौ ॥ २ ॥
जाहिर चसम को दूरि करौ तुम, अन्दर घसि के पैठौ ।
असमान के बीच रखाना[6] है इक, उस हुजरे[7] में बैठौ ॥ ३ ॥

(१) भरमाया। (२) नाश करावै। (३) राशि, वर्ग, गण और मूल (जिससे जन्मपत्री की विधि ज्योतिषी हिसाब करते हैं) क़ाइम करके। (४) धिक्कार। (५) बैकुंठ। (६) रखना=मोखा। (७) कोठरी।

कीजै फहम फना को लै कै, नूर तजल्ली अपना।
पलटूदास मकाँ हूहू[1] का, दीद दानिस्तन[2] सुनना ॥ ४ ॥

१४२

मुरसिद जात खुदाय की, दरगाह बताया।
परवर पाक दिगार[3] को, दिल बीच मिलाया ॥ १ ॥
बंदगी दम दम की भरौं, दानिस्त[4] दिखाया।
तिनुका ओट पहाड़ है, बिन चस्म[5] लखाया ॥ २ ॥
कुदरति देख सुभान की, दिल हौल है मेरा।
मौजूद रहै वजूद में, बिन तसबी फेरा ॥ ३ ॥
तख्त चढ़े दुरवेस हैं, बातैं आफरीनी[6]।
मुअज्जिज[7] हैं असमान में, औ साफा सीनी[8] ॥ ४ ॥
छत्र फिरै सिर नूर का, सब बुजरुग हारे।
पलटुदास मिलि खाक में, हम खोजि निकारे ॥ ५ ॥

१४३

काल आय नियराना है, हरि भजो सखी री ॥ टेक ॥
सीत वात कफ घेरि लेहिंगे, करिहैं प्रान पयाना है।
तीनिउँ पन धोखे में बीते, अब क्या फिरै भुलाना है ॥ १ ॥
घाट बाट में रोकै टोकै, माँगै गुरु-परवाना है।
पलटूदास होय जब गुरुमुख, तब कुछ मिलै ठिकाना है ॥ २ ॥

१४४

मैं बलिहारी जाउँ जेहि मुख, हरि जस उचरै ॥ टेक ॥
जातिन नीच होय फिर कुष्टी, सरवरि[9] करै न कोई।
कोटि कुलीन होय ब्रह्मा सम, ता सम तुलै न कोई ॥ १ ॥
जेकँहै सिव सनकादिक खोजें, सुर मुनि ध्यान लगावैं।
सो हरि उनके पीछे पीछे संख चक्र लिये धावैं ॥ २ ॥

(१) वह मकान जहाँ से ओं ओं की धुनि उठती है। (२) चित्त देकर। (३) पाक परवरदिगार या पालने वाला। (४) अनुभव ज्ञान। (५) आँख। (६) प्रशंसा के योग्य। (७) प्रतिष्ठित। (८) शुद्ध हृदय। (९) बराबरी।

कोटिन तीरथ उनके चरनन, मुक्ति है उनकी चेरी ।
पहुँचत हैं बैकुंठ सोई, पद-रज जै जै केरी ॥ ३ ॥
जो सुख हरि घर दुर्लभ देखा, सो उनके घर माहीं ।
पलटूदास संत घर हरि हैं, हरि के घर अब नाहीं ॥ ४ ॥

१४५

सिर धुनि धुनि पछताऊँ, देखि जग रीती हो ।
बिषै लहर गै सोय माया जग जीती हो ॥ १ ॥
माया रूपी जाल सकल जग बाझा[1] हो ।
ज्ञानी जोगी जती परे तेहिं माँझा हो ॥ २ ॥
बूड़ैं औ उतरायँ माया के सागर हो ।
उ नहिं सकै बचाय माया नट नागर हो ॥ ३ ॥
रगुन फाँसी हाथ ठगिनि यह माया हो ।
ुर मुनि देइ गिराय तनिक नहिं दाया हो ॥ ४ ॥
काम क्रोध की लहर सकल जग जागै हो ।
चिंता डसै सरीर नींद नहिं लागै हो ॥ ५ ॥
चतुर सकल संसार माया महँ राचा हो ।
अहमक पलटूदास भागि कै बाचा हो ॥ ६ ॥

१४६

हरि चरनन चित लाओ हो सरिहैं सब काज ॥ टेक ॥
काल बली सिर ऊपर हो तीतर को बाज ।
चंगुल तर चिचिऐहौ हो जब मिलै मिजाज ॥ १ ॥
भजन बिना का नर तन हो रैयत बिनु राज ।
बिना पिता कै बालक हो रोवै बिनु साज[2] ॥ २ ॥
देव पित्र उपवासी[3] हो परि है जम गाज[4] ।
बहुत पुरुष कै नारी हो बिस्वैं[5] नहिं लाज ॥ ३ ॥

(१) फँसा। (२) बिना ताल स्वर के। (३) उपासना या पूजा करने वाले।
(४) बिजली। (५) कसबी।

काम क्रोध बिनु मारे हो का दैहौ सिर ताज।
पलटुदास धिक जीवन हो सब झूँठ समाज ॥ ४

१४७

काटौँ फन्दा करम का जो होवै मेरा।
उलटि लिखौँ तेहि भाल[1] में कोइ सकै न फेरा ॥ १
जा खोजत ब्रह्मा भुले सुर मुनि बहुतेरा।
सो पद दैहौँ ताहि को जिन मो को हेरा ॥ २
मरन जियन में सब परा दुख सहत घनेरा।
करम के बसि फाँसी फँसे मुए गुरु औ चेरा ॥ ३
भरम छुड़ावौँ ताहि को आवागवन निबेरा।
सत्त लोक पहुँचाय को नहिँ लावौँ देरा ॥ ४
अमर लोक बैठाय के तहवाँ द्यों डेरा।
सुखी करौँ तेहि जन्म को जो पलटू केरा[2] ॥ ५ ॥

१४८

मत कोउ गहो वह पद निरबान ॥ टेक ॥
घर के हित सब वैरी होइहैं, गुनि गुनि वेद पुरान ॥ १ ॥
अलख नाम सोई से हित करु, राम नाम गलतान[3] ॥ २ ॥
राँध परोसिन गारी देहैं, लोग कहैं बौरान ॥ ३ ॥
सतगुरु साहिब मिले मसूका[4], आसिक है पलटू अलगान ॥४॥

१४९

कौन भक्ति तोरी करौँ राम में, कौन भक्ति तोरी करौँ।
तुझ में महँ तुही है मुझ में, कौन ध्यान लै धरौँ ॥ १ ॥
मरों नहीं मारे काहू के, नाहिँ जराये जरौँ।
कैसन पाप पुन्न है कैसन, सरग नरक नहिं डेरौँ ॥ २ ॥
तीरथ व्रत ध्यान नहिँ पूजा, विना परिस्रम तरौँ।
पलटू कहै सुनो भाइ साधो, सन्त चरन सिर धरौँ ॥ ३ ॥

(१) माथा। (२) का। (३) मस्त। (४) प्रीतम।

शब्द

१५०

आई मुझ लेन को दूती । पिया के सेज मैं सूती ॥ १ ॥
उठी मैं नींद की माती । मिला मोहिँ सेज का घाती ॥ २ ॥
कथौं क्या अकथ की कथनी । मथौं मैं तत्त की मथनी ॥ ३ ॥
अधर में चाँदनी छिटकी । सुरत की डोरि ले लटकी ॥ ४ ॥
लटू तहँ सुनत बनि आवै । खुसी में कौन बिलगावै ॥ ५ ॥

१५१

मौनी मुख से बोल, मौन मनै मन रहु ॥ टेक ॥
उनमुनि मुद्रा ध्यान लगावै, मन में उलटि समावै ।
निरबिकार निरबैर जगत से, सो मौनी मोहिँ भावै ॥ १ ॥
अजपा जाप जपै बिनु रसना, सुन्य में तुही अकेला ।
मौनी मन को राखु निरंतर, तुहीं गुरू तुहिं चेला ॥ २ ॥
भूख लगे पर सैन बतावै, प्यास लगे पर पानी ।
मन तरसत है बोलै कारन, कौन भक्ति तुम जानी ॥ ३ ॥
रब्रह्म पुरुसोत्तम स्वामी, सब घट ब्यापक सोई ।
लटू कहै सुनो हो मौनी, मौन काहि से होई ॥ ४ ॥

१५२

कोइ कोइ संत सुजान, जानै बस्तु आपनी ॥ टेक ॥
जिन जाना तिन हीं सुख पाया, और सबै हैरान ॥ १ ॥
संग्रह त्याग नहीँ कुछ एको, नहीँ मान अपमान ॥ २ ॥
सम्पति बिपति अस्तुती निंदा, ना कुछ लाभ न हान ॥ ३ ॥
पलटुदास खोजत सब मरि गा, परा रहै चौगान[1] ॥ ४ ॥

१५३

गाफिल में क्या सोवता, सुन मुरख अनारी ।
साहिब से दिल लाय ले, यह अरज हमारी ॥ १ ॥
जोरू बेटा कौन का, किस का है भाई ।
मुलुक खजाना कौन का, कोउ संग न जाई ॥ २ ॥

(१) मैदान ।

हाथी घोड़ा तंबुवा[1], आवै केहि कामा ।
फूलन सेज बिछावते, फिर गोर[2] मुकामा ॥ ३ ॥
आलम[3] का पातसा हुआ, तूही कुल कुल्ला ।
यह सब ख़्वाब की लहर है, दरियाव क बुल्ला ॥ ४ ॥
पाव घरी में कूच है, क्या देरी लावै ।
पलटू की सतराम[4] है, तोहि काल बुलावै ॥ ५ ॥

१५४

मन वच कर्म भजौ करतार । भजन बिना नहिं पैहौ पार ॥१॥
नहिँ मोरे मात पिता सुत नार । माया मोह झूँठ घरबार ॥२॥
ना हम केहु के कोउ न हमार । झूँठी प्रीति करै संसार ॥३॥
नर्क सर्ग नहिँ वार न पार । बिनु सतगुरू कौन निस्तार ॥४॥
मन के जीते पलटू जीति । अजर जरै तो निबहै प्रीति ॥५॥

१५५

केहि विधि राम नाम अनुरागै, दिल की भरम न भागै ॥टेक॥
विनु खाये चित चैन न होवै, खाये आलस लागै ।
बूझि विचारि दोऊ हम देखा, मन माया नहिँ त्यागै ॥ १ ॥
रैयत एक पाँच ठकुराई, दस दिसि है मौआसा[5] ।
रजो तमो गुन खरे सिपाही, करहिँ भवन में वासा ॥ २ ॥
पाप पुन्य मिलि करहिँ दिवानी, नगरी अदल न होई ।
दिवस चोर घर मूसन लागे, माल-धनी गा सोई ॥ ३ ॥
इतने वैरी रहैँ जीव के, उलटि पवन जब जागै ।
गुरु का ज्ञान बान लै पहुँचै, ब्रह्म अगिनि दै दागै ॥ ४ ॥
काया घेरि अमल करु जोरा, धर्म द्वार मन माँगै ।
पलटूदास मूल घै मारै, पुलकि पुलकि तब पागै ॥ ५ ॥

१५६

सबद सबद सब कहत है, क्या सबद कहाई ।
केतिक ब्रह्मा लिखि गये, सो हम हीँ भाई ॥ १ ॥

---

(१) तम्बू । (२) क़बर । (३) समार । (४) नमस्कार । (५) ठग ।

एक जोति बादसाह भइ, तीन्युँ लोक पसारा।
तेहि को मारि गिराइया, सिर छत्र हमारा ॥ २ ॥
बहुत समाधी सिव थके, वहँ पवन न पैसा[1] ।
केतिक जुग परलै गये, तब के हम बैसा ॥ ३ ॥
चाँद सुरुज एकौ नहीँ, धरती नभ साता।
राम कृस्न कोटिन मुए, कहूँ तब की बाता ॥ ४ ॥
उपजत बिनसत सब गया, बिस चारि अठैसा[2] ।
सो सब पलटू देखिया, हम जैसे क तैसा ॥ ५ ॥

१५७

जिसी से लगन है लागी, उसी से काम है मेरा।
डेरैँगी नाहिँ डेर जग को, हँसैगा लोग बहुतेरा ॥ १ ॥
नचन का सौक है मेरा, घुँघट को खोलि डालौँगी।
सीस लै धरौँगी आगे, सजन के मनै मानौँगी ॥ २ ॥
अधर गति खूब लाओँगी, धरौँगी ज्ञान की बाजी।
परैगा दाँव जब मेरा, सजन को करौँगी राजी ॥ ३ ॥
नैन भरि बदन[3] को देखा, पलटू असमान को खोला।
जान कुरबान कै सदके, सजन तब हाँसि कै बोला ॥ ४ ॥

साखी

॥ गुरुदेव ॥

संत संत सब बड़े हैं, पलटू कोऊ न छोट।
आतम-दरसी मिहीं है, और चाउर सब मोट॥ १॥

पलटू ऐना[1] संत हैं, सब देखै तेहि माहिँ।
टेढ़ सोझ मुँह आपना, ऐना टेढ़ा नाहिँ॥ २॥

वहि देवा को पूजिये, सब देवन कै देव।
पलटू चाहै भक्ति जो, सतगुरु अपना सेव॥ ३॥

सतगुरु केरे सबद की, लागी मन में चोट।
पलटू रन में बचि गया, कादिर[2] ही की ओट॥ ४॥

माहातम जानै नहीं, मेंड़की गंगा बीच।
पलटू सबद लगै नहीं, कतनो रहै नगीच॥ ५॥

पलटू सतगुरु सबद की, तनिक न करै बिचार।
नाव मिली केवट नहीं, कैसे उतरै पार॥ ६॥

॥ नाम ॥

जप तप तीरथ बर्त है, जोगी जोग अचार।
पलटू नाम भजे विना, कोउ न उतरै पार॥ ७॥

पलटू जप तप के किहे, सरै न एकौ काज।
भवसागर के तरन को, सतगुरु नाम जहाज॥ ८॥

जड़ि बूटी के खोजते, गई सुध्याई[3] खोय।
पलटू पारस नाम का, मनै रसायन होय॥ ९॥

॥ चितावनी ॥

पलटू यहि संसार में, कोऊ नाहीं हीत।
सोऊ वैरी होत है, जा को दीजै प्रीत॥ १०॥

पलटू नर तन पाइ कै, मूरख भजै न राम।
कोऊ ना सँग जायगा, सुत दारा धन धाम॥ ११॥

---

(१) दर्पण। (२) समरथ। (३) शुद्धता।

बैद धनंतर मरि गया, पलटू अमर न कोय।
सुर नर मुनि जोगी जती, सबै काल बसि होय॥ १२॥

पलटू पल में कूच है, क्या लावो बड़ी देर।
अब की बार जो चूकहू, फिर चौरासी फेर॥ १३॥

बजा नगारा कूच का, लदा न एकौ ऊँट।
पलटू तलबी अस भई, तन भी गया है छूट॥ १४॥

जो दिन गया सो जान दे, मूरख अजहूँ चेत।
कहता पलटूदास है, करि ले हरि से हेत॥ १५॥

पलटू नर तन पाइ कै, भजे नहीं करतार।
जमपुर बाँधे जाहुगे, कहौं पुकार पुकार॥ १६॥

पलटू नर तन जातु है, सुंदर सुभग सरीर।
सेवा कीजै साध की, भजि लीजै रघुबीर॥ १७॥

पलटू सिष्य जो कीजिये, लीजै बूझ बिचार।
बिन बूझे सिष करौगे, परिहै तुम पर भार॥ १८॥

दिना चारि का जीवना, का तुम करौ गुमान।
पलटू मिलिहै खाक में, घोड़ा बाज[1] निसान॥ १९॥

पलटू हरि जस गाइ ले, यही तुम्हारे साथ।
बहता पानी जातु है, धोउ सिताबी[2] हाथ॥ २०॥

॥ प्रेम ॥

राम नाम जेहि मुखन तें, पलटू होय प्रकास।
तिन के पद बंदन करौं, वो साहिब मैं दास॥ २१॥

तन मन धन जेहि राम पर, कै दीन्हौं बकसीस[3]।
पलटू तिन के चरन पर, मैं अरपत हौं सीस॥ २२॥

राम नाम जेहि उच्चरै, तेहि मुख देहुँ कपूर।
पलटू तिन के नफर[4] की, पनहीं का मैं धूर॥ २३॥

(१) बाजा। (२) जल्द। (३) यहाँ "भेंट" का अर्थ है। (४) सेवक।

पलटू ऐसी प्रीति करु, ज्यों मजीठ को रंग।
टूक टूक कपड़ा उड़ै, रंग न छोड़ै संग ॥ २४ ॥
आठ पहर जो छकि रहै, मस्त अपाने हाल।
पलटू उन से सब डेरैं, वो साहिब के लाल ॥ २५ ॥
करम जनेऊ तोड़ि कै, भरम किया छयकार[1]।
जेहि गोबिँद[2] गोबिँद[3] मिले, थूक दिया संसार ॥ २६ ॥
पलटू सीताराम से, हम तो किहे हैं प्रीति।
देखि देखि सब जरत हैं, कौन जक्त की रीति ॥ २७ ॥
पलटू बाजी लाइहौं, दोऊ बिधि से राम।
जो मैं हारौं राम को, जो जीतौं तौ राम[4] ॥ २८ ॥
पलटू हम से राम से, ऐसो भा ब्यौहार।
कोउ कितनो चुगली करै, सुनै न बात[5] हमार ॥ २९ ॥
पलटू जस मैं राम का, वैसे राम हमार।
जा की जैसी भावना, ता से तस ब्यौहार ॥ ३० ॥

॥ बिश्वास ॥

मनसा बाचा कर्मना, जिन को है बिस्वास।
पलटू हरि पर रहत हैं, तिन्ह के पलटू दास ॥ ३१ ॥
पलटू संसय छूटि गे, मिलिया पूरा यार।
मगन आपने ख्याल में, भाड़ पड़ै संसार ॥ ३२ ॥
ज्यों ज्यों रूठै जगत सब, मोर होय कल्यान।
पलटू बार न बाँकिहै, जो सिर पर भगवान ॥ ३३ ॥
संत बचन जुग जुग अचल, जो आवै बिस्वास।
बिस्वास भये पर ना मिलै, तौ झूठा पलटूदास ॥ ३४ ॥
पलटू संत के बचन को, ख्याल करै ना कोइ।
टुक मन में निस्चै करै, होइ होइ पै होइ ॥ ३५ ॥

---

(१) नाश। (२) पलटू साहिब के गुरू का नाम। (३) ईश्वर। (४) जो हारूँ तो मैं राम का हुआ और जो जीतूँ तो राम मेरे हुए। (५) शिकायत।

पलटू लिखा नसीब का, संत देत हैं फेर।
साच नहीं दिल आपना, ता से लागै देर ॥ ३६ ॥

॥ सूरमा ॥

धुजा फरकै सुन्य में, अनहद गड़ा निसान।
पलटू जूझा खेत पर, लगा जिकर[1] का बान ॥ ३७ ॥
लगा जिकर का बान है, फिकर भई छयकार।
पुरजे पुरजे उड़ि गया, पलटू जीति हमार ॥ ३८ ॥
नौबत बाजै ज्ञान की, सुन्य धुजा फहराय।
गगन निसाना मारि कै, पलटू जीते जाय ॥ ३९ ॥
बखतर पहिरे प्रेम का, घोड़ा है गुरुज्ञान।
पलटू सुरति कमान लै, जीति चले मैदान ॥ ४० ॥
दसो दिसा मुरचा किहा, बाती दिहा लगाय।
काया गढ़ में पैसि[2] कै, पलटू लिहा छुड़ाय ॥ ४१ ॥
पलटू कफनी बाँधि कै, खीँचौ सुरति कमान।
संत चढ़े मैदान पर, तरकस बाँधे ज्ञान ॥ ४२ ॥
सोई सिपाही मरद है, जग में पलटूदास।
मन मारे सिर गिरि पड़ै, तन की करै न आस ॥ ४३ ॥
सिर पर कफनी बाँधि कै, आसिक कबर खोदाव।
पलटू मेरे घर महैं, तब कोउ राखै पाँव ॥ ४४ ॥

॥ पतिव्रता ॥

जो पिव चाहै सुन्दरी, मन मैदा करु पीस।
पतिबरता पलटू भई, बेँदी झलकै सीस ॥ ४५ ॥

॥ विनय ॥

तुम तजि दीनानाथ जी, करै कौन की आस।
पलटू जो दूसर करै, तो होइ दास की हाँस ॥ ४६ ॥
ना मैं किया न करि सकौं, साहिब करता मोर।
करत करावत आपु है, पलटू पलटू सोर ॥ ४७ ॥

---

(१) सुमिरन। (२) घस कर।

पलटू तेरी साहिबी, जीव न पावै दुक्ख।
अदल होय बैकुंठ में, सब कोइ पावै सुक्ख ॥ ४८ ॥

॥ भक्त जन ॥

जैसे काठ में अगिन है, फूल में है ज्यों बास।
हरि जन में हरि रहत है, ऐसे पलटूदास ॥ ४९ ॥
मिँहदी में लाली रहै, दूध माहिँ घिव होय।
पलटू तैसे संत हैं, हरि बिन रहैं न कोय ॥ ५० ॥
छोड़ै जग की आस को, काम क्रोध मिटि जाय।
पलटू ऐसे दास को, देखत लोग डेराय ॥ ५१ ॥
अस्तुति निन्दा कोउ करै, लगै न तेहि के साथ।
पलटू ऐसे दास के, सब कोइ नावै माथ ॥ ५२ ॥
आठ पहर लागी रहै, भजन तेल की धार।
पलटू ऐसे दास को, कोउ न पावै पार ॥ ५३ ॥
सरबरि[१] कबहुँ न कीजिये, सब से रहिये हार।
पलटू ऐसे दास को, डेरिये बारम्बार ॥ ५४ ॥
पलटू हरिजन मिलन को, चलि जइये इक धाप।
हरि जन आये घर महैँ, तो आये हरि आप[२] ॥ ५५ ॥
दुष्ट मित्र सब एक[३] है, ज्योँ कंचन त्योँ काँच।
पलटू ऐसे दास को, सुपने लगै न आँच ॥ ५६ ॥
ना जीने की खुसी है, पलटू मुए न सोच।
ना काहू से दुष्टता, ना काहू से रोच ॥ ५७ ॥
काम क्रोध जिन के नहीं, लगै न भूख पियास।
पलटू उनके दरस से, होत पाप को नास ॥ ५८ ॥
नरक सरग से जुदा है, नहीं साध असाध।
ना जानौं मैं कौन हूँ, पलटू सहज समाध ॥ ५९ ॥

(१) बराबरी। (२) एक लिपि मे "हरि आप" की जगह "हरि के बाप" है। (३) समान।

॥ साध ॥

खोजत खोजत मरि गये, तीरथ बेद पुरान।
पलटू सूझत है नहीं, भेष में हैं भगवान ॥ ६० ॥
साध परखिये रहनि में, चोर परखिये रात।
पलटू सोना कसे में, झूठ परखिये बात ॥ ६१ ॥
बृच्छा बड़ परस्वारथी, फरै और के काज।
भवसागर के तरन को, पलटू संत जहाज ॥ ६२ ॥
साध हमारी आतमा, हम साधन के दास।
पलटू जो दोहति[1] करै, होय नरक में बास ॥ ६३ ॥
पलटू तीरथ को चला, बीचे मिलि गे संत।
एक मुक्ति के खोजते, मिलि गइ मुक्ति अनन्त ॥ ६४ ॥
पलटू तीरथ के गये, बड़ा होत अपराध।
तीरथ में फल एक है, दरस देत हैं साध ॥ ६५ ॥
जिन देखा सो बावला, को अब कहै सँदेस।
दीन दुनी दोउ भूलिया, पलटू सो दुरवेस ॥ ६६ ॥
तड़पै बिजुली गगन में, कलस[2] जात है फूटि।
पलटू संत के नाँव से, पाप जात है छूटि ॥ ६७ ॥
की तौ हरि चर्चा सहैं, की तौ रहै इकंत।
ऐसी रहनी जो रहै, पलटू सोई संत ॥ ६८ ॥
साधु बचन साचा सदा, जो दिल साचा होय।
पलटू गाँठि में बाँधिये, खाली परै न कोय ॥ ६९ ॥
टुक मन में बिस्वास करु, होय होय पै होय।
पलटू संत औ अगिन जल, छोट कहै मत कोय ॥ ७० ॥
पलटू संत औ अगिन जल, छोट कहै मत कोय।
जो चाहैं सोई करैं, उन से सब कुछ होय ॥ ७१ ॥

(१) दुभाँता। (२) घड़ा।

पलटू चाहैं सो करैं, उन से सब कुछ होय।
राम का मिलना सहज है, संत मिला जो होय ॥ ७२ ॥
राम का मिलना सहज है, संत का मिलना दूरि।
पलटू संत के मिले बिनु, राम से परै न पूरि ॥ ७३ ॥
काम क्रोध तो है नहीं, नहीं लोभ नहिं मोह।
पलटू जो है सोई है, नहीं हेत नहिं द्रोह ॥ ७४ ॥
ज्यों फुलेल त्यों राख है, ज्यों घास त्यों पान।
पलटू संग्रह त्याग नहिं, सो जोगी परमान ॥ ७५ ॥
खोजत खोजत मरि गये, तीरथ बेद पुरान।
पलटू सूझै है नहीं, भेष महैं भगवान ॥ ७६ ॥

॥ पाखण्डी ॥

पलटू निकसे त्यागि कै, फिरि माया को ठाट।
धोबी को गदहा भयो, ना घर को ना घाट ॥ ७७ ॥
पलटू मन मूआ नहीं, चले जगत को त्याग।
ऊपर धोये का भया, जो भीतर रहि गा दाग ॥ ७८ ॥
घर छोड़ै बैराग में, फिरि घर आवै जाय।
पलटू आइ के सरन में, तनिकौ नाहिं लजाय ॥ ७९ ॥
भेष बनावै भक्त का, नाहिं राम से नेह।
पलटू पर-धन हरन को, बिस्वा[1] बेचै देह ॥ ८० ॥
पलटू जटा रखाय सिर, तन में लाये राख।
कहत फिरैं हम जोगी, लरिका दोवे काँख ॥ ८१ ॥

॥ सतसंग ॥

संगति ऐसी कीजिये, जहवाँ उपजे ज्ञान।
पलटू तहाँ न बैठिये, घर की होय जियान[2] ॥ ८२ ॥
सतसंगति में जाइ कै, मन को कीजे सुद्ध।
पलटू उहाँ न जाइये, जहवाँ उपजि कुबुद्ध ॥ ८३ ॥

---

(१) वेश्या, पतुरिया। (२) हानि।

॥ उपदेश ॥

पलटू गुनना छोड़ि दे, चहै जो आतम सुक्ख।
संसय सोइ संसार है, जरा मरन को दुक्ख ॥ ८४ ॥
पलटू सीताराम से, लगी रहै वह रट्ट।
तनिक न पलक बिसारिये, चित्त परै की पट्ट ॥ ८५ ॥
तरकस बाँधे तीन ठौ, पलटू हरि के लाग।
इन तीनहुँ को नाम है, भक्ति ज्ञान बैराग ॥ ८६ ॥
भक्ति ज्ञान बैराग से, तीर निकारा तीन।
पलटू इन को मारिये, इक दुनिया इक दीन ॥ ८७ ॥
लोभ मोह अहंकार तजि, काम क्रोध सब खोय।
पलटू इतने कसर हैं, नाम हमारा होय ॥ ८८ ॥
बिना पंथ के चले से, पंथ न पूछै कोय।
पलटू बिन साधन किहे, सिद्ध कहाँ से होय ॥ ८९ ॥
सीस नवावै संत को, सीस बखानौं सोय।
पलटू जे सिर ना नवै, वेहतर कद्दू होय ॥ ९० ॥
सुख के सागर राम हैं, दुख के भंजनहार।
राम चरन तजिये नहीं, भजिये बारंबार ॥ ९१ ॥
उदर बराबर खाइ ले, पलटू लगै न दाग।
बासी धरै चकोर जो, पर में लागै आग ॥ ९२ ॥
पलटू पलटू क्या करै, मन को डारै धोय।
काम क्रोध को मारि कै, सोई पलटू होय ॥ ९३ ॥
सुनि लो पलटू भेद यह, हँसि बोले भगवान।
दुख के भीतर मुक्ति है, सुख में नरक निदान ॥ ९४ ॥
पलटू जननी से कहै, यही हमारी सीख।
सकठा[1] पुत्र न राखिये, जनमत दीजै बीख[2] ॥ ९५ ॥

---

(१) अभक्त। (२) विष, जहर।

पलटू संत जो कहि गये, सोई बात है ठीक।
बचन संत के नहिं टरै, ज्यों गाड़ी की लीक ॥ ९६ ॥
मन से माया त्यागि दे, चरनन लागी आय।
पलटू चेरी संत की, अंत कहाँ को जाय ॥ ९७ ॥
पंडित ज्ञानी चातुरा, इन से खेलौ दूर।
एक साच हिरदे बसै, पलटू मिलै जरूर ॥ ९८ ॥
मरते मरते सब मरे, मरै न जाना कोय।
पलटू जो जियतै मरै, सहज परायन[1] होय ॥ ९९ ॥
सब से नीचा होइ रहु, तजि बिबाद को तीर[2] ।
पलटू ऐसे दास का, कोऊ न दामन-गीर[3] ॥१००॥
पलटू का घर अगम है, कोऊ न पावै पार।
जेकरे बड़ी पियास है, सिर को धरै उतार ॥१०१॥
बिन खोजे से ना मिलै, लाख करै जो कोय।
पलटू दूध से दही भा, मथिबे से घिव होय ॥१०२॥
पलटू पलक न भूलिये, इतना काम जरूर।
खामिँद कब गोहरावही, चाकर रहै हजूर ॥१०३॥
आठ पहर चौंसठ घरी, पलटू परै न भोर[4] ।
का जानी केहि औसरै, साहिब ताकै मोर ॥१०४॥
पलटू सीताराम से, साची करिये प्रीति।
अपनी ओर निबाहिये, हारि परै की जीति ॥१०५॥
गारी आई एक से, पलटे भई अनेक।
जो पलटू पलटै नहीं, रहै एक की एक ॥१०६॥
जल पषान के पूजते, सरा न एकौ काम।
पलटू तन करु देहरा, मन करु सालिगराम ॥१०७॥
पलटू नेरे साच के, झूठे से है दूर।
दिल में आवै साच जो, साहिब हाल हजूर ॥१०८॥

(१) पार। (२) निकटता, संगत। (३) पल्ला पकड़ने वाला। (४) भूल।

पलटू यह साँची कहै, अपने मन को फेर।
तुझे पराई क्या परी, अपनी ओर निबेर ॥१०९॥
कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर।
समय पाय तरवर फरै, केतिक सींचो नीर ॥११०॥
बृच्छा फरै न आप को, नदी न अँचवै नीर।
पर स्वारथ के कारने, संतन धरैं सरीर ॥१११॥
ज्ञान देय मूरख कहै, पलटू करै बिबाद।
बाँदर को आदी दिया, कछु ना कहै सवाद ॥११२॥

॥ मन ॥

मन हस्ती मन लोमड़ी, मनै काग मन सेर।
पलटुदास साची कहै, मन के इतने फेर ॥११३॥

॥ मान ॥

बड़े बड़ाई में भुले, छोटे हैं सिरदार।
पलटू मीठो कूप जल, समुँद पड़ा है खार ॥११४॥
सब से बड़ा समुद्र है, पानी हैगा खारि।
पलटू खारी जानि कै, लीन्हों रतन निकारि ॥११५॥
पलटू यह मन अधम है, चोरौ से बड़ चोर।
गुन तजि औगुन गहतु है, तातें बड़ा कठोर ॥११६॥
कहत कहत हम मरि गये, पलटू बारम्बार।
जग मूरख मानै नहीं, पड़ै आप से भाड़ ॥११७॥

॥ दुष्ट और कपटी ॥

पलटू मैं रोवन लगा, जरी जगत की रीति।
जहँ देखौ तहँ कपट है, का से कीजे प्रीति ॥११८॥
मुँह मीठो भीतर कपट, तहाँ न मेरो बास।
काहू से दिल ना मिलै, तौ पलटू फिरै उदास ॥११९॥
पलटू पाँव न दीजिये, खोटा यह संसार।
हीताई[1] करि मिलत है, पेट महैं तरवार ॥१२०॥

(१) मित्र बन कर।

पलटू पाँव न दीजिये, यह जग बुरी बलाय।
लिहे कतरनी काँख में, करै मित्रता धाय ॥१२१॥
साहिब के दरबार में, क्या झूठे का काम।
पलटू दोनों ना मिलै, कामी और अकाम ॥१२२॥
हिरदे में तो कुटिल है, बोलै बचन रसाल।
पलटू वह केहि काम का, ज्यों नारुन फल लाल ॥१२३॥
अधम अधमई ना तजै, हरदी तजै न रंग।
कहता पलटूदास है, (चहे) कोटि करै सतसंग ॥१२४॥
सतगुरु बपुरा क्या करै, चेला करै न होस।
पलटू भीजे मोम ना, जल को दीजै दोस ॥१२५॥
ज्ञान धनुष सतगुरु लिहे, सबद चलावै बान।
पलटू तिल भरना धसै, जियतै भया पषान ॥१२६॥

॥ कामिनी ॥

मुए सिंह की खाल को, हस्ती देखि डेराय।
असिउ[1] बरस की बूढ़ि को, पलटू ना पतियाय ॥१२७॥
असिउ बरस की नारि को, पलटू ना पतियाय।
जियत निकोवै[2] तत्तु को, मुए नरक लै जाय ॥१२८॥
खरबूजा संसार है, नारी छूरी पैन।
पलटू पंजा सेर का, यों नारी का नैन ॥१२९॥
माया ठगिनी जग ठगा, इकहैं[3] ठगा न कोय।
पलटू इकहैं सो ठगै, (जो) साचा भक्ता होय ॥१३०॥

॥ जल पापान पूजन—तीर्थ व्रत ॥

जल पषान बोलै नहीं, ना कछु पिवै न खाय।
पलटू पूजै संत को, सब तीरथ तरि जाय ॥१३१॥
सब तीरथ में खोजिया, गहरी बुड़की मार।
पलटू जल के बीच में, किन पाया करतार ॥१३२॥

---

(१) अस्सी बरस। (२) निचोड़ ले। (३) उसको।

पलटू जहँवाँ दो अमल, रैयत होय उजाड़ ।
इक घर में दस देवता, क्योंकर बसै बजार ॥ १३३॥

॥ ब्राह्मन ॥

पलटू बाम्हन है बड़ा, जो सुमिरै भगवान ।
बिना भजन भगवान के, बाम्हन ढेढ़[1] समान ॥१३४॥
सात दीप नौ खंड में, देख्यो तत्तु निचोय ।
साध का बैरी कोइ नहीं, इक बाम्हन होय तो होय ॥१३५॥
सकठा बाम्हन मञ्जखवा, ताहि न दीजै दान ।
इक कुल खोवै आपनो, (दूजे) संग लिये जजमान ॥१३६॥
सकठा बाम्हन ना तरै, भक्ता तरै चमार ।
राम भक्ति आवै नहीं, पलटू गये खुवार ॥१३७॥

॥ महंत ॥

पलटू कीन्हो दंडवत, वै बोले कछु नाहिं ।
भगत जो बनै महंथ से, नरक परै को जाहि ॥१३८॥
पलटू माया पाइ कै, फूलि के भये महंथ ।
मान बड़ाई में मुए, भूलि गये सत पंथ ॥१३९॥
गोड़ धरावैं संत से, माया के महमंत ।
पलटू बिना बिबेक के, नरकै गये महंत ॥१४०॥

॥ मिश्रित ॥

हिन्दू पूजै देवखरा, मुसलमान महजीद ।
पलटू पूजै बोलता, जो खाय दीद बरदीद ॥१४१॥
पलटू अपने भेद से, कारन पैदा होय ।
जरि कै वन ह्वैगे भसम, आगि न लावै कोय ॥१४२॥
चारि वरन को मेटि कै, भक्ति चलाया मूल ।
गुरु गोबिंद के बाग में, पलटू फूला फूल ॥१४३॥

---

(१) सुअर ।

हद अनहद दोऊ गये, निरभय पद है गाढ़ ।
निरभय पद के बीच में, पलटू देखा ठाढ़ ॥१४४॥
सुख में सेवा गुरू की, करते हैं सब कोय ।
पलटू सेवै बिपति में, गुरु-भगता है सोय ॥१४५॥
पलटू मैं रोवन लगा, देखि जगत की रीति ।
नजर छिपावै संत से, बिस्वा से है प्रीति ॥१४६॥
कमर बाँधि खोजन चले, पलटू फिरे उदेस[1] ।
षट दरसन सब पचि मुए, कोऊ न कहा सँदेस ॥१४७॥
पलटू तेरे हाथ की, करी परी कमान ।
जो खींचै सो गिरि परै, जोधा भीम समान ॥१४८॥
सिष्य सिष्य सबही कहै, सिष्य भया ना कोय ।
पलटू गुरु की बस्तु को, सीखै सिष तब होय ॥१४९॥
ज्ञान ध्यान जानै नहीं, करते सिष्य बुलाय ।
पलटू सिष्य चमार सम, गुरुवा मेस्तर[2] आय ॥१५०॥
इन्द्री जीति कारज करै, जगत सराहै भोग ।
जैसे बर्षा सिखर पर, नहीं भींजवे जोग ॥१५१॥
पलटू हरि के कारने, हम तो भये फकीर ।
हरि से पंजा लाय फिर, तीनों लोक जगीर ॥१५२॥
पलटू लेखे जक्त के, जोगिया गया खराब ।
जोगिया जानै जग गया, दोनों देत जबाब ॥१५३॥
झाड़ नहीं फल खात है, नहीं कूप को प्यास ।
परस्वारथ के कारने, जन्मे पलटूदास ॥१५४॥
खोजत गठरी लाल की, नहीं गाँठि में दाम ।
लोक लाज तोड़ै नहीं, पलटू चाहै राम ॥१५५॥
मरनेवाला मरि गया, रोवै सो मरि जाय ।
समझावै सो भी मरै, पलटू को पछिताय ॥१५६॥

(१) अवदेश या विदेश। (२) भंगी।

पलटू प्रेमी नाम के, सो तो उतरे पार।
कामी क्रोधी लालची, बूड़ि मुए मँझधार ॥१५७॥
सिंहन के लेंहड़ा किन देखा, बसुधा भरमे एक।
ऐसे संत कोइ एक हैं, और रँगे सब भेष ॥१५८॥
नहिं हीरा बोरन चलै, सिंह न चलैं जमात।
ऐसे संत कोइ एक हैं, और माँग सब खात ॥१५९॥
पलटुदास के हाथ की, चोखी है तरवार।
जो छूए सो गिरि पड़ै, मूँठी में है धार ॥१६०॥
पलटू नर तन पाइकै, आवैगा केहि काम।
वहि मुख में कीड़ा परै, जो न भजै हरिनाम ॥१६१॥
पलटू जे कहैं मरि मरौं, सो न आपने हाथ।
कहन सुनन में मन नहीं, रहनि लाज के साथ ॥१६२॥
मूआ है मरि जायगा, मुए के बाजी ढोल।
सुपन सनेही जग भया, सहदानी रहिगे बोल ॥१६३॥
पलटू जो कोइ देखै, तिस की सरना भाग।
उलटा कूप है गगन में, तिस में जरै चिराग ॥१६४॥
गाँसी छूटै सबद की, मूरख करै न ज्ञान।
पलटू सतगुरु क्या करैं, हिरदय भया पखान ॥१६५॥

॥ इति ॥

हद अनहद दोऊ गये, निरभय पद है गाढ़ ।
निरभय पद के बीच में, पलटू देखा ठाढ़ ॥१४४॥
सुख में सेवा गुरू की, करते हैं सब कोय ।
पलटू सेवै बिपति में, गुरु-भगता है सोय ॥१४५॥
पलटू मैं रोवन लगा, देखि जगत की रीति ।
नजर छिपावै संत से, बिस्वा से है प्रीति ॥१४६॥
कमर बाँधि खोजन चले, पलटू फिरे उदेस[1] ।
षट दरसन सब पचि मुए, कोऊ न कहा सँदेस ॥१४७॥
पलटू तेरे हाथ की, करीं परी कमान ।
जो खींचै सो गिरि परै, जोधा भीम समान ॥१४८॥
सिष्य सिष्य सबही कहै, सिष्य भया ना कोय ।
पलटू गुरु की बस्तु को, सीखै सिष तब होय ॥१४९॥
ज्ञान ध्यान जानै नहीं, करते सिष्य बुलाय ।
पलटू सिष्य चमार सम, गुरुवा मेस्तर[2] आय ॥१५०॥
इन्द्री जीति कारज करै, जगत सराहै भोग ।
जैसे बर्षा सिखर पर, नहीं भींजबे जोग ॥१५१॥
पलटू हरि के कारने, हम तो भये फकीर ।
हरि से पंजा लाय फिर, तीनों लोक जगीर ॥१५२॥
पलटू लेखे जक्त के, जोगिया गया खराब ।
जोगिया जानै जग गया, दोनों देत जबाब ॥१५३॥
झाड़ नहीं फल खात है, नहीं कूप को प्यास ।
परस्वारथ के कारने, जन्मे पलटूदास ॥१५४॥
खोजत गठरी लाल की, नहीं गाँठि में दाम ।
लोक लाज तोड़ै नहीं, पलटू चाहै राम ॥१५५॥
मरनेवाला मरि गया, रोवै सो मरि जाय ।
समझावै सो भी मरै, पलटू को पछिताय ॥१५६॥

(१) अवदेश या विदेश। (२) भंगी।

पलटू प्रेमी नाम के, सो तो उतरे पार।
कामी क्रोधी लालची, बूड़ि मुए मँझधार ॥१५७॥
सिंहन के लेंहड़ा किन देखा, बसुधा भरमे एक।
ऐसे संत कोइ एक हैं, और रँगे सब भेष ॥१५८॥
नहिं हीरा बोरन चलै, सिंह न चलैं जमात।
ऐसे संत कोइ एक हैं, और माँग सब खात ॥१५९॥
पलटुदास के हाथ की, चोखी है तरवार।
जो छूए सो गिरि पड़ै, मूँठी में है धार ॥१६०॥
पलटू नर तन पाइकै, आवैगा केहि काम।
वहि मुख में कीड़ा परै, जो न भजै हरिनाम ॥१६१॥
पलटू जे कहै मरि मरौं, सो न आपने हाथ।
कहन सुनन में मन नहीं, रहनि लाज के साथ ॥१६२॥
मूआ है मरि जायगा, मुए के बाजी ढोल।
सुपन सनेही जग भया, सहदानी रहिगे बोल ॥१६३॥
पलटू जो कोइ देखै, तिस की सरना भाग।
उलटा कूप है गगन में, तिस में जरै चिराग ॥१६४॥
गाँसी छूटै सबद की, मूरख करै न ज्ञान।
पलटू सतगुरु क्या करै, हिरदय भया पखान ॥१६५॥

संतबानी की कुल पुस्तकों का सूचीपत्र

कबीर साहिब का अनुराग सागर १।)
कबीर साहिब का बीजक १।)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह १।।।)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग १)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग १)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग ।।।)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग ।।)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते और झूलने ।।।)
कबीर साहिब की अखरावती ।=)
धनी धरमदास जी की शब्दावली ।।।)
तुलसी साहिब (हाथरसवाले) की शब्दावली भाग १ १।।)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित १।।)
तुलसी साहिब का रत्नसागर २)
तुलसी साहिब का घट रामायण पहला भाग २।।)
तुलसी साहिब का घट रामायण दूसरा भाग २।।)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी" २।।)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द" २।।)
सुन्दर विलास १।।)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ १)
पलटू साहिब भाग २—रेख़ते, झूलने, अरिल, कवित्त, सवैया १)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ १)
जगजीवन साहिब की बानी पहला भाग १।)
जगजीवन साहिब की बानी दूसरा भाग १।)
दूलनदास जी की बानी ।।)
चरनदास जी की बानी, पहला भाग १।)
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग १।)
गरीबदास जी की बानी १।।।)
रैदास जी की बानी १)
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर ।।।)
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी ।।।)
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी ।।।)
भीखा साहिब की शब्दावली ।।।)
गुलाल साहिब की बानी १।)
बाबा मलूकदास जी की बानी ।।)
गुसाईं तुलसी दास जी की बारहमासी =)
यारी साहिब की रत्नावली ।)
बुल्ला साहिब का सब्दसार ।)
केशवदास जी की अमींघूँट ।)
धरनी दास जी की बानी ।।)
मीराबाई की शब्दावली १)
सहजोबाई का सहज-प्रकाश १)
दयाबाई की बानी ।=)
संतबानी संग्रह, भाग १ (साखी) [प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित] ३)
संतबानी संग्रह, भाग २ (शब्द) [ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं हैं] ३)
अहिल्या बाई (अँग्रेजी पद में) ।)

संत महात्माओं के चित्र—

दादूदयाल =)
मीराबाई =)
दरिया साहब (बिहार) =)

दाम में डाक महसूल व पैकिङ्ग शामिल नहीं है, वह अलग से लिया जावेगा।

पता—मैनेजर, बेलवडियर प्रेस, प्रयाग।

संतबानी पुस्तक-माला पर दो शब्द

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिनका लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उनमें से विशेष तो पहिले कहीं छपी ही नहीं थीं और जो छपी भी थीं सो प्राय: ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भरसक तो पूरे ग्रन्थ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं, प्राय कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुकाबिला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है, और कठिन और अनूठे शब्दो के अर्थ और संकेत फुट नोट मे दे दिये गये हैं। जिन महात्मा की बानी है उनका जीवन चरित्र भी साथ ही में छापा गया है। और जिन भक्तो और महापुरुषो के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृतान्त और कौतुक संक्षेप से फुट नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात संतबानी संग्रह भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकी हैं, जिनका नमूना देखकर महामहोपाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी वैकुंठ-वासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और बुद्धिमानों के वचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१६ में छपी है, जिसके विषय में श्रीमान् महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—"यह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है, जो सोने के तोल सस्ता है।"

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तकमाला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिनमें प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षायें दी गई हैं। उनका नाम और दाम सूची में छपा है। कुल पुस्तकों की सूची नीचे लिखे पते से मुफ्त मँगाइए।

मैनेजर—संतबानी पुस्तकमाला कार्यालय,
बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद—२

पलटू साहिब की बानी

भाग ३

—:ꕥ:—

जिस में

उनके मनोहर शब्द और साखी टिप्पनी सहित
छपी हैं।

प्रकाशक
बेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स
इलाहाबाद

पाँचवीं बार] सन् १९५५ ई० [मूल्य १)

Printed and Published
at The Belvedere Printing Works, Allahabad, By B. Sajjan.